



श्री वीतरागाय नम ।

अथ श्री पांच सुमति तीन गुप्तिका थोकडा ।



श्री उत्तराध्ययन सूत्रका अध्ययन २४ में पांच सुमति तीन गुप्तिका अधिकार है उसका थोकडा—

पांच सुमति के नाम—इरिया सुमति १, भाषा सुमति २ पर्यणसुमति ३, आदान भण्ड मत निवेवणा सुमति ४, उच्चारणा सवण खेल जल संघयण परीठावणीया सुमति ५ ॥ तीन गुप्तिके नाम—मनगुप्ति ६, वचनगुप्ति ७, वायगुप्ति ८, इसको भाठ प्रयचन माता भी कहते हैं ।

१ इरियासुमति का चार० भेद—आलम्यन १, काल २, मार्ग ३, जयणा ४, । आलम्यन के तीन भेद—ज्ञान, दर्शन, चारित्र्य । कालके दो भेद—दिन और रात । मार्ग के दो भेद—कुपन्य यजोनि सुपन्य चाले । जयणाके चार भेद—द्रव्य, क्षेत्र, काल, माय । द्रव्य से—छ कायके जीवों को देखकर यत्नापूर्वक चाले । क्षेत्रसे—धू सरा (चार हाथ) प्रमाण देखकर यत्ना पूर्वक चाले । कालसे—दिनमें देखकर चले और रातमें पू जकर चले । भाषसे—दश बोल छोड़कर चले— शब्द, रूप, रस, गन्ध,

७ नोट—पाठा तरे पांच पांच भेद भी कहते हैं—१ द्रव्य, २ क्षेत्र, ३ काल, ४ भाष, ५ गुण । गुणसे कम निजराका हेतु कहते हैं ।

(अपमृत्य) — साधु निमित्त आहारादि उधार लाकर देवे ते दोष । १० परित्यज्य (परित्यज्य) — साधु निमित्त अपनी वस्तु देकर बदले में दूसरी वस्तु लाकर देवे ते दोष । ११ अमिहृदे (अमिहृत्) — सामा जाकर आहारादि देवे ते दोष । १२ उ-
 विमन्ने (उद्विन्ने) — लेपनादिक (छादा) छोलकर देवे ते दोष । १३ मालोहृदे (मालापहृत) — पीढो नीसरणी गगार
 ऊँचे नीचे तीरच्छे से वस्तु निकाल कर देने ते दोष । १४ अचिज्जे (आच्छेद्य) — निरबलसे सबल उबरजस्ती दिलवावे या
 खोस कर देवे ते दोष । १५ अनिस्तुटे (अनिस्तुट्) — दो के सीरकी वस्तु एक दूसरे की बिना मरजी देवे ते दोष । १६
 अज्जोयरए (अज्ययपूरक) — अगाड़ी आधन माहि साधु आया जाण अधिक ऊर देवे ते दोष ॥ इति उद्गम का १६ दोष ॥

अथ उत्पाद का १६ दोष---(जीभ्यारे लोलुपीपणसे साधु लगावे)

मूल गाथा—घाई दुई निमित्त आजीव वर्णीमगे तिगिच्छाय । कोहे माणे माया लोभे य इवति दस एए ॥ ३ ॥

पुत्रि-प-छा-सयव विज्ञा मत य चूरण जोणे य । उपायणाई दोसा सोलसमे मूलकम्म य ॥ ५ ॥

१ घाई (इधारी) — धायरो काम करके आहारादि लेवे ते दोष । २ दुई (दूती) — दूतपना याने गृहस्थीका सन्देश पडु वा
 कर आहारादि लेवे ते दोष । ३ निमित्ते (निमित्त) — भूत भविष्यत वर्तमान कालके लाभालाभ सुख दुःख जीवित मरणादि
 घटला कर आहारादि लेवे ते दोष । ४ आजीव (आजीविका) — अपना जाति कुल आदि प्रकाश कर आहारादि लेवे ते दोष ।
 ५ वर्णीमगे (वर्णीपक) — राक भित्तारी की तरह दीनपना से आहारादि लेवे ते दोष । ६ तिगिच्छे (चिकित्सा) — चैद्यकी करके
 आहारादि लेवे ते दोष । ७ कोहे (क्रोध) — क्रोध करके आहारादि लेवे ते दोष । ८ माणे (मान) — अहंकार करके लेवे ते

स्पर्श, चापण, पृष्ठण, परिग्रहण अणुपेक्षा, धर्मकथा' ॥ २ भाग्य सुमति का चार भेद—द्रव्य क्षेत्र, काल भाव । द्रव्यसे—
आठ थोला छोड़कर भाग्य बोले कौंच, मान, माया, लोभ, हास्य मय, मुखरी वदन, विख्या । क्षेत्रसे—रस्ते चारता नहीं बोले ।
कात्से—एक प्रहर रात्री जामेवा दल उदय तक थडे स्वरले नहीं बोले । भाग्यसे राग द्वेय रहित बोले । ३ पयणासुमति
के चार भेद—द्रव्य क्षेत्र, काल भाव । द्रव्य से—ध्यालीस दोष छोड़ कर आहार पाणी लेवे ।

अथ उद्गमका १६ दोष—(दातारसु लागे)

गाथा—आह।कम्मुदसिय पूर्वकम्मे य मीसजाण य । तवणा पाहुडियाए गजामर कीय पामिचे ॥ १ ॥

परिकाट्टिए अभिइडे उच्चित्र मालोइड इय । आठिउजे अणिसिद्ध अज्जोवरए य सोलसमे ॥ २ ॥

प्राकर्मों)—साधके निमित्त यनागे ते दोष । २ उद्देसिये (बीदे शिक)—जिस साधुके लिये आधाकर्मों
ले तो उसको आधाकर्मों दोष लगे । और दूसरा साधु ले तो उद्देसिय दोष लगे । ३ पूर्वकम्मे

गाहि आधाकर्मोंका अ शमात्र भी मित्र आय 'हस्तार घरके आतरे भी आधाकर्मों आहार का बंधा
गाप (मित्र जाते)—आपरे वास्ते और साधु दे वास्ते भेला राधे ते दोष । ४ टयणा (स्या-
व्यापकर रखे, दूसरे को न दे ते दोष । ५ प्राशुडियाए (प्राशुतिका)—साधु अर्थ

७ पाभोअर (प्रादुकरण)—अधारा गाहि प्रबदा करे देवे ते दोष । ८
पात्र आदि मोल लाकर तथा उपाग्रय घेवाला नेकर देवे ते दोष । ९ पात्रिचे

(अपमित्य) — साधु निमित्त आहारादि उधार लाकर देवे ते दोष । १० परियट्टिप (परिवर्तित) — साधु निमित्त अपनी वस्तु देकर बदले में दूसरी वस्तु लाकर देने ते दोष । ११ अमिहडे (अभिहत) — सामा जाकर आहारादि देवे ते दोष । १२ उ-
 मिहने (उद्धिन) — लेपनादिक (छोटा) खोलकर देवे ते दोष । १३ मालोहडे (मालापहत) — पीढी नीसरणी लगाकर
 ऊँचे नीचे तीरच्छे से वस्तु निकाल कर देवे ते दोष । १४ अच्छिउजे (आच्छेद्य) — निरथलसे सफल उबरजस्ती दिलवावे या
 खोस कर देवे ते दोष । १५ अणिस्तिहे (अनिष्टपट) — दो के सीरकी वस्तु एक दूसरे को बिना मज्जी देवे ते दोष । १६
 अउओयरप (अन्यवपूरक) — अगाड़ी आधण माहि साधु आया जाण अधिक ऊर देवे ते दोष ॥ इति उद्गम का १६ दोष ॥

अथ उरुपाद का १६ दोष--(जीभ्यारे लोलपीपणासे साधु लगावे)

मूल गाथा—घाई दुई निमित्त आजीव वणीमगे तिगिच्छाय । कोहे माणे माया लोभे य हवति दस एए ॥ ३ ॥

पुध्वि-म-घा-सथव विज्जा मते य चूरण जोगे य । उप्पायणाइ दोसा सोलसम मूलकम्म य ॥ ५ ॥

१ घाई (ईधारी) — धायरो काम करके आहारादि लेवे ते दोष । २ दुई (दूती) — दूतपना याने गृहस्थीका सन्देशा पडु का
 कर आहारादि लेवे ते दोष । ३ निमित्ते (निमित्त) — भूत भविष्यत वर्तमान कालके लाभालाभ सुख दुःख जीवित मरणादि
 बतला कर आहारादि लेवे ते दोष । ४ आजीव (आजीविका) — अपना जाति कुल आदि प्रकाश कर आहारादि लेवे ते दोष ।
 ५ वणोमगे (वनीपक) — राक भिखारी की तरह दीपना से आहारादि लेवे ते दोष । ६ तिगिच्छे (चिक्कित्ता) — चंदकी करके
 आहारादि लेवे ते दोष । ७ कोहे (क्रोध) — क्रोध करके आहारादि लेवे ते दोष । ८ माणे (मान) — अहंकार करके लेवे ते

सं० गा०

४ आश्विनमेष्ठ मत निरुपणा सुमति का चार भेद—द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव । द्रव्यसे भंड उपगरण चक्रपात्र प्रमाणसे अधिक रखते नहीं, और जपणासे लेवे और जपणासे रखे । क्षेत्रसे इबारिया विषयिया राते नहीं, गीर गृहस्त्रीके घर पर रखते नहीं । कालसे कालोक्काल दार्ढ्यमसर उपयोग पूर्वक पडिलेहण करे । भागसे धर्मका उपगरण राग द्वेष रहीन भोगवे ॥

नहीं। कालसे कालोबाल टाईमसर उपयोग पूर्वक पंडिलेहण कर। मांस धनका उत्पन्न कर।
 ५ उच्चार पासयण खेल जल संघयण परीठायणीया सुमतिका चार भेद—द्रव्य, शेष, काल भाव। द्रव्यसे दश बोल छोडके
 परटे “१ कोई आवे नहीं और कोई देखे भी नहीं यहाँ परटे। २ अपनी आत्मा और दूसरेकी आत्मा व्याघात नहीं पाने
 यहाँ परटे। ३ ऊँची नीची भूमिका हो वहा न परटे। ४ पौली भूमिका हो वहा नहीं परटे। ५ थोडे कालकी अबोत
 भूमिका हो वहा न परटे। ६ एक हाथ लम्बी, एक हाथ चौडी अबीत भूमिका हो वहा परटे। ७ जघय चार आगत्र धरती में
 अबीत भूमिका हो वहा परटे। ८ उदर प्रमुख के बोल हो वहाँ न परटे। ९ बीज, हरा अंडुर हरी वनस्पति, लीलण, फूलण,
 वन, घायर जीव हो वहा न परटे। १० गावके या शहर के नजीक गृहस्थी को दुर्गछा आवे वहा न परटे॥” क्षेत्रसे शहरमें
 रहा हुआ साधु शहर के नजीक न परटे, और गृहस्थी को दुर्गछा आवे वहाँ न परटे। शहर बाहर रहा हुआ साधु शहरमें आय
 कर न परटे और रस्तेमें न परटे। कालसे कालोबाल पडगोरी पडिलेहणा करे, पाठान्तरे दिवसे देखी हुई भूमिकामें रानिये
 परटे। भावसे स्थानमेंसे जाते आयस्सहि आवस्सहि करे भूमिका पूजे, शमेन्द्र महाराजरी आज्ञा मागकर चार आगल अजिन्नु
 परटे, परठकर तीन चार दोसिरे दोसिरे कहे, पीछा आता निस्सीहि निस्सीहि कहे और स्थान पर आय कर काउस्सग करे॥
 अब तीन गुप्तिका भेद कहते हैं—मनगुप्ति—आद, शेट, उच्च, उद्देश सकल विषय में मन प्रवर्तये नहीं १ सारभ
 २ समारंभ ३ आरंभ मनमें करे नहीं। वचन गुप्ति—चार विकथा करे नहीं, सारंभ समारंभ आरंभ वचनमे करे कटावे नहीं।

कायगुप्ति—सनयणा जोग प्रवृत्ताये, अजयणा जोग प्रवृत्ताये नही, सारंभ समारंभ आरंभ कायासे कर करावे गर्हा ॥ ७

॥ इति पांचसुमति तीन गुप्तिका थोकडा समाप्तम् ॥

अथ २५॥ साढा पचीस आर्य देश—१ मगध देश राजगृहीनगरी १ थोड ६६ लाट ग्राम । २ अंग देश चंपागरी ५ लाट ग्राम । ३ यग देश तामलिर्सीनगरी १८ लाट ग्राम । ४ कलिंग देश पंचनपुर नगर २० लाट ग्राम । ५ काशी देश याणारसी नगरी १ लाट ६० हजार ग्राम । ६ कोशल देश सार्वेत्त (अजोध्या) नगर ६६ हजार ग्राम । ७ कुरु देश गजपुर नगर (हथीणापुर) ८ लाट २३ हजार ४२५ ग्राम । ८ कुरात्त देश सीरीपुर नगर १ लाट ४३ हजार ग्राम । ९ पांचाल देश कपिलपुर नगर ३ लाट ६३ हजार ग्राम । १० जगल देश अहिच्छता नगरी १ लाट ४५ हजार ग्राम । ११ सोरठ देश द्वारावती (झारका) नगरी ६ लाट ८० हजार ग्राम । १२ बिदेह देश मिथिला नगरी ८ हजार ग्राम । १३ वत्स (कठ) देश कोशीयी नगरी २८ हजार ग्राम । १४ शाडिल देश तदीपुर नगरी २१ हजार ग्राम । १५ मलय देश भादिलपुर नगरी ७० हजार ग्राम । १६ वच्छ देश वेराटपुरी (नगरी) २ लाट ८८ हजार ग्राम । १७ यरण देश अच्छापुरी (नगरी) २४ हजार ग्राम । १८ दशार्ण देश सृत्तिकावती नगरी १८ हजार ग्राम । १९ वैदक (वेदी) देश शौक्तिकावती नगरी ४२ हजार ग्राम । २० सिंधू देश योतभय (पाटण) नगर ६ लाट ८० हजार ५०० ग्राम । २१ सीधीर देश मधुरा नगरी ८ हजार ग्राम । २२ मूरत्सेन देश पाया नगरी ३६ हजार ग्राम । २३ मंग देश मासपुरी नगरी ५२ हजार ४५० ग्राम । २४ कुणाल देश सावथी नगरी ६३ हजार ग्राम । २५ लाट देश

७ नोट—१ सारंभ कहेता यह मर जाते तो अच्छा ऐसा न विचारे । २ समारंभ कहता उपको कोई मार जाने ता अच्छा एग न विचारे । ३ आरंभ कहेता मैं उसको मार डालु ऐसा न विचारे ।

कोटीरूपे नगरी ७ लाख १३ हजार ग्राम । २५ वैक्य (अर्द्ध कयेइ) अर्द्ध देश प्रेतायिका नगरी १ लाख २६ हजार ग्राम आर्य्य १ लाख २६ हजार ग्राम अनाथ्य ७ हजार ग्राम गाल्मे । ग्राम सकया धीपन्नाजी सूत्रके अर्थमें है ।

अथ एतरे कर्मभूमि क्षेत्र माहे देश पंड ना विचार लिखते है—ज्यूदीपमें १० लाख ८८ हजार देश । धातकी पंडमें २१ लाख ७६ हजार देश । पुष्करार्द्धमें २१ लाख ०६ हजार देश । सर्व आर्य देश ४३३५ जाणवा ॥ ज्यूदीप में ८६७ देश आर्य जाणवा, १० लाख ८७ हजार १३३ देश अनार्य जाणवा । धातकी खंडमें १७३४ देश आर्य, २१ लाख ७४ हजार २६६ देश अनार्य पुष्करार्द्धमें १७३४ देश आर्य, २१ लाख ७४ हजार २६६ देश अनार्य ज्यू दीपरे भरत क्षेत्र में १५५ देश आर्य ३१६७४॥ देश अनार्य । इस ज्यूदीपरे परवत में भी २५५ देश आर्य ३१६७४॥ देश अनार्य । ज्यू दीपरे माहाविदेहमें ८१६ देश आर्य, १० लाख ८४ देश अनार्य । धातकी खंडरे २ भरत २ परवत एवं ४ क्षेत्रमें १०२ देश आर्य, १ लाख २७ हजार ८६८ देश अनार्य । धातकी पंडरे २ माहाविदेहमें १६३२ देश आर्य २० लाख ४६ हजार ३६८ देश अनार्य । धातकी खंडमें कहा जिस तरह ही पुष्करार्द्ध में कह देणा । एतरे कर्म भूमि का खंड १ हजार ५० जाणवा । ज्यूदीपमें २०४ खंड । धातकी पंडमें ४०८ खंड पुष्करार्द्धमें ४०८ खंड ॥ अटार दीपमें १७० आर्य खंड जाणवा ८५० अनार्य खंड जाणवा । ज्यूदीपमें ३४ खंड आर्य, १७० पंड अनार्य । धातकी खंडमें ६८ खंड आर्य, ३४० खंड अनार्य । पुष्करार्द्ध में ६८ खंड आर्य, ३४० पंड अनार्य । भरत क्षेत्रमें १ खंड आर्य ५ पंड अनार्य । परवत क्षेत्रमें १ खंड आर्य, ५ पंड अनार्य । माहाविदेह क्षेत्रमें ३२ खंड आर्य १६० खंड अनार्य जाणवा ॥ इति १५ कर्मभूमि देश खंड विचार समाप्त है।

श्री अगरचंद भैरोदान सेठिया जैनप्रयालय । चीकानेर (राजपूताना) शुभ भवतु

अथ श्री ज्ञानलब्धि का थोकड़ा प्रारम्भ ।

सूत्र भगवती जीरे शतक आठमें उद्देशे दुजेमें ज्ञान लब्धी (लब्धि) से थोकहो चाले सो कहे छे —

जीव गइ इन्द्रि काग मुहुम पञ्चत्त भवथा, भव सिद्धिआए सन्नी, लखि उपयोग जोगे, लेस्या कसाय बंटे, आहार नाए गोवरे, काल अन्तर अप्पानहु परयथा चे दारिय ॥

जीव—समुच्चय जीवमें ५ ज्ञान ३ अज्ञान नी भजना, पहिली नारकी सुवनपति चाणव्यतर देयता में ३ ज्ञानरी नियमा ३ अज्ञानरी भजना, दुजी नारकीसु सातमी नारकी तक ज्योतिषी सु नवप्रयेयक तक ३ ज्ञान ३ अज्ञानरी नियमा, पाच अनुत्तर विमाणमें ३ ज्ञानरी नियमा, पाच स्थावर असन्नी मनुष्यमें २ अज्ञानरी नियमा, तीन चिकलेन्द्रियमें असन्नी तिर्यचमें २ ज्ञान २ अज्ञानरी नियमा, सन्नी तिर्यचमें ३ ज्ञान ३ अज्ञानरी भजना, सन्नी मनुष्यमें ५ ज्ञान ३ अज्ञानरी भजना, सिद्ध भगवानमें केवल ज्ञानरी नियमा ॥ १ ॥ २ गई—नरक गतियोंमें और देव गतियोंमें तीन ज्ञानरी नियमा ३ अज्ञानरी भजना, तिर्यच गतियोंमें २ ज्ञान २ अज्ञानरी नियमा, मनुष्य गतियोंमें ३ ज्ञानरी भजना २ अज्ञानरी नियमा, सिद्ध गतियों में केवल ज्ञानरी नियमा ॥ ३ ॥ ४ दि—सहन्द्रिया और पंचेन्द्रिया में ४ ज्ञान ३ अज्ञानरी भजना, एकेन्द्रिया में २ अज्ञानरी नियमा, तीन चिकलेन्द्रिया में २ ज्ञान २ अज्ञानरी नियमा, अणेन्द्रिया में केवल ज्ञानरी नियमा ॥ ४ काए—सकाइया और नसकाइया में ५ ज्ञान ३ अज्ञानरी भजना,

पृथ्वीकाश्या अपकाश्यातेऽ काश्या वायुकाश्या धनस्पति काश्या में २ अज्ञानरी नियमा, अकाश्या में केवल ज्ञानरी नियमा ॥ ५ सुक्ष्म—सुक्ष्म में २ अज्ञानरी नियमा, वायुमें ५ ज्ञान ३ अज्ञान री भजना, जो सुक्ष्म जो वायुमें केवलज्ञानरी नियमा ॥ ६ पञ्चतन्त्र—समुच्चय परजापतामें ५ ज्ञान ३ अज्ञानरी भजना, पहिली नारकी सु नयग्रंथेयक तक रे परजापता में ३ ज्ञान ३ अज्ञानरी नियमा, पांच अनुसर विमाण रे परजापते में ३ ज्ञानरी नियमा, पाच स्थावर तीन विकलेन्द्रिय असन्नी तिर्यच रे परजापतेमें २ ज्ञान २ अज्ञानरी नियमा, सन्नी तिर्यच रे परजापते में ३ ज्ञान ३ अज्ञानरी भजना, मनुष्यरे परजापतेमें ५ ज्ञान ३ अज्ञानरी भजना, समुच्चय अपरजापते में ३ ज्ञान ३ अज्ञानरी भजना, पहिली नारकी मुनयपति घाणव्यंतर रे अपरजापते में ३ ज्ञानरी नियमा ३ अज्ञानरी भजना, दूजी नारकी सुं छट्टी नारकी तर सौर ओतिरी सु नयग्रंथेयक तक रे अपरजापते में ३ ज्ञान ३ अज्ञानरी नियमा सातमी नारकी रे अपरजापते में ३ अज्ञानरी नियमा, पांच अनुतर विमाण रे अपरजापतेमें ३ ज्ञानरी नियमा, पाच स्थावर असन्नी मनुष्य रे अपरजापतेमें २ अज्ञानरी नियमा, तीन विकलेन्द्रिय असन्नी तिर्यच सन्नी तिर्यच रे अपरजापते में २ ज्ञान २ अज्ञानरी नियमा सन्नी मनुष्यरे अपरजापते में ३ ज्ञानरी भजना २ अज्ञानरी नियमा, जो परजापता जो अपरजापता में केवल ज्ञानरी नियमा ॥ ७ भवथा—नरक भवथामें सौर देव भवथामें ३ ज्ञानरी नियमा तीन अज्ञानरी भजना, तिर्यच भवथामें ३ ज्ञान ३ अज्ञानरी भजना मनुष्य भवथा में ५ ज्ञान ३ अज्ञानरी भजना, सिद्ध भवथा में केवल ज्ञानरी नियमा ॥ ८ भयत्तिविधा—भय सिद्धिया में ५ ज्ञान ३ अज्ञानरी भजना धमरी में ३ अज्ञानरी भजना जो मायी जो भगधो में केवल ज्ञानरी नियमा ॥ ९ सन्नी—सन्नीमें ४ ज्ञान ३ अज्ञानरी भजना, असन्नी में २ ज्ञान २ अज्ञानरी नियमा, जो सन्नी जो असन्नी में केवल ज्ञानरी नियमा ॥ १० तदि—तद्विरा १ भेद ज्ञान दूरभण, वारिज, चरितार्चिते, धान, लाभ भोग, उपभोग धीये, इतिदय । समुच्चय ज्ञान

लक्ष्मिमें ५ ज्ञानरी भजना, तस्स अलक्ष्मियेमें ३ अज्ञानरी भजना, मतिज्ञान श्रुत ज्ञानरे लक्ष्मियेमें ४ ज्ञानरी भजना तस्स अलक्ष्मियेमें ४ ज्ञान ३ अज्ञानरी भजना केवल ज्ञानरी नियमा, अवधि ज्ञानरे लक्ष्मियेमें ४ ज्ञानरी भजना तस्स अलक्ष्मियेमें ४ ज्ञान ३ अज्ञानरी भजना, मन परजव ज्ञानरे लक्ष्मियेमें ४ ज्ञानरी भजना तस्स अलक्ष्मियेमें ४ ज्ञान ३ अज्ञानरी भजना, केवल ज्ञानरे लक्ष्मियेमें केवल ज्ञानरी नियमा तस्स अलक्ष्मियेमें ४ ज्ञान ३ अज्ञानरी भजना, मति अज्ञान श्रुतअज्ञान रे लक्ष्मियेमें ३ अज्ञानरी भजना तस्स अलक्ष्मियेमें ५ ज्ञानरी भजना, तस्स अलक्ष्मियेमें ५ ज्ञानरी भजना २ अज्ञानरी नियमा, समुद्धय दर्शनमें ५ ज्ञान ३ अज्ञानरी भजना, समदर्शन लक्ष्मियेमें ५ ज्ञानरी भजना तस्स अलक्ष्मियेमें ३ अज्ञानरी भजना, मिय्यात दर्शन और मिथ दर्शन लक्ष्मियेमें ३ अज्ञानरी भजना, तस्स अलक्ष्मियेमें ५ ज्ञान ३ अज्ञानरी भजना, चक्षु दर्शन अवचक्षु दर्शन रे लक्ष्मियेमें ४ ज्ञान ३ अज्ञानरी भजना, अवधि दर्शन रे लक्ष्मियेमें ४ ज्ञानरी भजना ३ अज्ञानरी नियमा केवल दर्शन रे लक्ष्मियेमें केवल ज्ञानरी नियमा, समुद्धय चारित्रमें ५ ज्ञानरी भजना तस्स अलक्ष्मियेमें ४ ज्ञान ३ अज्ञानरी भजना, सामायिक चारित्र छोडो परपापनीय चारित्र परिहारपिशुख चारित्र सुत्तमसम्पराय चारित्ररे लक्ष्मियेमें ४ ज्ञानरी भजना तस्स अलक्ष्मियेमें ५ ज्ञान ३ अज्ञानरी भजना, यथाप्यात चारित्र रे लक्ष्मियेमें ५ ज्ञानरी भजना तस्स अलक्ष्मियेमें ५ ज्ञान ३ अज्ञानरी भजना, चरिता चरितेमें ३ ज्ञानरी भजना तस्स अलक्ष्मियेमें ५ ज्ञान ३ अज्ञानरी भजना, लाम लक्ष्मि, भोग लक्ष्मि, उपभोग लक्ष्मि, वीर्य लक्ष्मिमें ५ ज्ञान ३ अज्ञानरी भजना तस्स अलक्ष्मियेमें केवल ज्ञानरी नियमा, बाल वीर्य लक्ष्मिमें ३ ज्ञान ३ अज्ञानरी भजना तस्स अलक्ष्मियेमें ५ ज्ञानरी भजना, बाल पण्डित वीर्य लक्ष्मियेमें ३ ज्ञानरी भजना तस्स अलक्ष्मियेमें ५ ज्ञान ३ अज्ञानरी भजना, पण्डित वीर्य लक्ष्मियेमें ५ ज्ञानरी भजना तस्स अलक्ष्मियेमें ४ ज्ञान ३ अज्ञानरी भजना, इन्द्रो लक्ष्मियेमें ४ ज्ञान ३ अज्ञानरी भजना, शोतेन्द्रिय चक्षु इन्द्रिय

प्रायेन्द्रिय के लक्षितों में ४ ज्ञान ३ अज्ञानरी भजना तस्स अलक्षित्ये ३ अज्ञानरी भजना २ अज्ञानरी नियमा, रत्नेन्द्रियके लक्षित्ये में ४ ज्ञान ३ अज्ञानरी भजना तस्स अलक्षित्ये केवलज्ञानरी नियमा, स्रष्टेन्द्रिय के लक्षित्येमें ४ ज्ञान ३ अज्ञानरी भजना तस्स अलक्षित्येमें केवलज्ञानरी नियमा ॥ ११ उपयोग सागर बहुत मणमार बहुतमें ५ ज्ञान ३ अज्ञानरी भजना ॥ १२ जोने—सजेली मनजोगी चवन जोगी काय जोगीमें ५ ज्ञान ३ अज्ञानरी भजना अजोगी में केवल ज्ञानरी नियमा ॥

१३ लेख्या—सलेशी शुक्ल लेखी में ५ ज्ञान ३ अज्ञानरी भजना, पृथ्वी नील लेखी कापोत लेखी तेजो लेखी पद्मलेखी में ४ ज्ञान ३ अज्ञानरी भजना अलेखी में केवल ज्ञानरी नियमा ॥ १४ कपाय—स कपाय क्रोध कपाय मान कपाय माया कपाय लोभ कपाय में ४ ज्ञान ३ अज्ञानरी भजना, अकपायमें ५ ज्ञानरी भजना ॥ १५ घेद—सवेद रवी वेद पुरय वेद नपु सफ वेदमें ४ ज्ञान ३ अज्ञानरी भजना, अवेदी में ५ ज्ञान री भजना ॥ १६ आहार—आहारिक में ५ ज्ञान ३ अज्ञान री भजना, अणाहारिक में ४ ज्ञान (मन परजव ज्ञान ट्यो) ३ अज्ञान री भजना ॥ १७ नाण गीयरे—मति ज्ञानी द्रव्य पक्षी क्षेत्रपक्षी कालधक्षी भावपक्षी आवे-रण सव विव्याय जाने पासे ॥ धुतबानी द्रव्य पक्षी क्षेत्रपक्षी कालधक्षी भावपक्षी उपयोग सखित जाने पासे ॥ अघधि ज्ञानी द्रव्य क्षेत्र काल भाव ॥ द्रव्य पक्षी सव रयी द्रव्य जाने देरी, क्षेत्रपक्षी अचान्य तो अगुल्लो भसंख्यातमी भाग जाने देले, उत्कृष्टो सव लोक धने लोक सरीवा भसंख्याता खंडवा आलोक में हुवे तोमी जाने देले, बालपक्षी जलन्य तो आवलीकारे, भसंख्यात में भाग जाने पासे उत्कृष्टो भसंख्यातो काल भसंख्यातो अघसरपणी भसंख्याती उत्सरपणो गयोकाल भागभ्यो बाल जाने पासे, भावपक्षी सर्ग भावरे अन्तमें भाव जाने पासे ॥ मनपयध ज्ञानी रा २ भेद ऋतुमति, विपुलमति, द्रव्य क्षेत्र काल भाव ॥ द्रव्य पक्षी ऋतुमति अनन्ता अनन्त प्रदेशी सच रुपी आठ फरती जाने देले, विपुलमति अनन्ता अनन्त प्रदेशी खन्य विपुल नि

मंला जाणे देखे, क्षेत्र थकी श्रुतुमति नीचो देखे तो रत्नाप्रभा पुढची रे खुडीयाक नामे पाणटे रे उपरले रो हेठलो तलो, तीछीं देखे तो अढाई अगुल उणो अढाई द्वीप सन्नी पचेन्द्री रे मनरा भाव जाणे, उचो देखे तो जोंतपीरो उपरलो तलो देखे, चिपुलमति श्रुतुमति माफक केणो । नवरङ्ग पटलो विशेष सपूर्ण अढाई द्वीप देसे विशुद्ध निर्मलो ! कालथकी श्रुतुमति जयन्य उत्कृष्टो पत्योपम रो असल्यातमो भाग जाणे देखे, चिपुल मति जयन्य उत्कृष्टो पत्योपम रो असल्यातमो भाग चिशुद्ध निर्मलो जाणे देखे, मावयकी श्रुतुमति सर्व भावरे अन्तमे भाग जाणे देखे, चिपुल मति सर्व भावरे अन्त में भाग विशुद्ध निर्मले जाणे देखे ॥ केवल ज्ञानी द्रव्य क्षेत्र फाल भाव । द्रव्यथकी सर्व द्रव्य जाणे पासे (देखे), क्षेत्र थकी सर्व क्षेत्र जाणे पासे, कालथकी सर्वकाल जाणे पासे, भावयकी सर्व भाव जाणे पासे ॥ मति अज्ञानी श्रुत अज्ञानी विमङ्ग ज्ञानी द्रव्य थकी क्षेत्र थकी कालथकी भावयकी आपरी निराज में आवे सो देखे ॥ १८ काल—काल कहता स्थिति समुच्चय ज्ञानी में भागा पावे २—साइया अपजविसीया—आद हू पण अन्त नही । साइया सपजविसीया आद भी हू अन्त भी हू समुच्चय ज्ञानी रे दुजे भागे री सपज विसीयारी स्थिति जयन्य अन्तर मुहुर्त्तरी उत्कृष्ट ६६ सागर जाधेरी । और मतिज्ञान श्रुति ज्ञानरी स्थिति जयन्य अन्तर मुहुर्त्तरी उत्कृष्ट ६६ सागर जाधेरी ६६ सागर जाधेरी, मन पर्येव ज्ञानरी स्थिति जयन्य १ समय री उत्कृष्टी देस उणी कोड पूर्वरी । केवल ज्ञानीमें भागो पावे १ साइया अपजविसीया ॥ मति अज्ञानी श्रुति अज्ञानीमें भागा पावे ३ अणाइया अपजविसीया (आदिनहीं और अन्त भी नहीं अमवी जीव), अणाइया सपजविसीया (आदि नहीं अन्त हू भवी जीव), साइया सपजविसीया (आदि मो हू और अन्त भी हू पडवाई समदृष्टी), तीजे मांगेरी स्थिति जयन्य अन्तर्मुहुर्त्तरी उत्कृष्टी देस उणी अर्द पुडलीकरी, विमङ्ग ज्ञानरी स्थिति जयन्य १ समय री उत्कृष्टी ३३ सागर देस उणी कोड पूर्व अधिक ॥

१६ अन्तर—अन्तर कहता आतरो समुच्चय नाणी रे पहिले भागे रो केवल ज्ञान रो आन्तरो नयी, समुच्चय ज्ञानी रे दुजे भागे रो ४ ज्ञानरो आतरो पहे तो ज्ञान्य अन्तर मुहूर्त रो उत्पद्ये देस उणो अर्द्ध पुद्गलीकरो, मति अज्ञानी श्रुति अज्ञानी रे तीजे भागे रो उत्पद्ये अनन्ते कात्तरो ॥२०॥ अप्रपञ्च—अपञ्च बहु कहता अल्प यदुत्त्व सबसें योडा मन पर्यव ज्ञानो ते थकी अथचि ज्ञानी अस्त्व्यात गुणा, ते थकी मति ज्ञानी श्रुत ज्ञानी आपसमे तुला विसेसाहीया केवल ज्ञानी अनन्त गुणा सबसें योडा विमर्ग ज्ञानी मति अज्ञानी श्रुत अज्ञानी आपस में तुला अनन्त गुणा । इहे ८ बोलरो भेलो अल्पा बोध कहे छे—सबसे योडा मन पर्यव ज्ञानी, ते थकी अथचि ज्ञानी अस्त्व्यात गुणा ते थकी मति ज्ञानी श्रुत ज्ञानी आपस में तुला विसेसाहीया, ते थकी विमर्ग ज्ञानी अस्त्व्यात गुणा ते थकी मति ज्ञानी श्रुत अज्ञानी आपसमे तुला अनन्त गुणा ॥ २१ ॥ पञ्चग योडा, विमर्ग ज्ञानी रा पञ्चग ते थकी मति ज्ञानी रा पञ्चग अनन्त गुणा, ते थकी केवल ज्ञानी रा पञ्चग अनन्त गुणा, ते थकी श्रुत योडरो भेलो अल्पाबोध कहे छे सब से योडा मन पर्यव ज्ञानी रा पञ्चग, ते थकी मति ज्ञानी रा पञ्चग अनन्त गुणा, सबसें ते थकी मति अज्ञानी रा पञ्चग अनन्त गुणा, ते थकी श्रुत अज्ञानी रा पञ्चग अनन्त गुणा, ते थकी केवल ज्ञानी रा पञ्चग अनन्त गुणा ॥ इहे ८ इति ज्ञान लब्धिका योकाडा समाप्तम् ।

॥ अथ प्रस्ताविक थोकडा प्रारम्भ ॥

संघयण छत्र धरनेयालोंकी गति—छेवट्टा संघयणका घणी क्षीपा देवलोक उपरान्त ७ जावे १, कीलका संघयणवाला छट्टा देवलोक तक जावे २, अर्द्धनाराच संघयणवाला आठमा देवलोक तक जावे ३, नाराच संघयण वाला बारमा देवलोके तक जावे ४ अष्टमनाराच संघयण वाला नवमैथेयक तक जावे ५, यज्ञस्रष्टमनाराच संघयण वाला पाच अनुत्तर विमाण तक जावे ६, साब नूत्र भगवती जी शतक २५ मा उद्देशे २४ में ।

छेवट्टा संघयण वाला पहिलो दुजो नारकी तक जावे १, कीलका संघयणवाला तीजी भारकी तक जावे २, अर्द्धनाराच संघयण वाला चौथी नारकी तक जावे ३, नाराच संघयणवाला पाचमी नारकी तक जावे ४, अष्टमनाराच संघयण वाला छट्टो नारकी तक जावे ५, यज्ञस्रष्टमनाराच संघयण वाला सातमी नारकी तक जावे ।

बोल छव—वाद्दर पृथ्वीकाय सात नरक, बारह देवलोक, नव प्रैथेयक, पाच अनुत्तर विमाण और सिद्धिशिला तक है १, वाद्दर अपकाय-सात नरक, बारह देवलोक तक लाभे २ । वाद्दर तैउकाय-अढाई द्वीप सीम लाभे, नवो मेह मनुष्यका जन्म मरण प्रमुल अढाई द्वीप माहें हुवे आगल नहीं ३ । वाद्दर वायुकाय सगले लोक माहें लाभे ४ । वाद्दर घनस्पति काय सात नरक बारह देवलोक सीम लाभे ५ । वेइन्द्रिय १ तेइन्द्रिय २, चोइन्द्रिय ३ जीव तीछाँ लोक माहें लाभे, उर्ध्व लोके मेह पर्वत नी यावडी प्रमुले लाभे, अधोलोके मेह पर्वत थी पक्षिम दिशे छेइली-दोय विजय अधोमूमि प्रामने विधेयु लाभे, त्रस जीव लोकने मध्यवर्ती एक राज

પ્રમાણ જાણ નાદિ લાગે, સૂક્ષ્મ પૃથ્વી કાચ આદિ વેદ પાંચ સાથર સગલે લોક માટે લાગે ॥ इति श्रद्धाया विचार ॥

બોલ હવે ગુણઠાણેકા—ચૌદહ ગુણઠાણા મેં ૧ પહિલો તથા ચૌદમો છોડ કર ચાકી ૧૨ ગુણઠાણા સંજોની નિયમા મ્હવી મેં પાવે ૧ ૧ પહિલો દૂજો તેરમો ચોદમો ગુણઠાણો છોડ કર ચાકી ૧૦ ગુણઠાણા નિયમા સંત્તીમેં પાવે ૨ ૧ પહિલે સુ તીનો ચારદમે સુ ચૌદમો છોડકર ૮ ગુણઠાણા ઉપરમ સમ્યક્ મેં પાવે ૩ ૧ પહિલે સુ ચૌયો રૂપારમેં ૩ ચૌદમો છોડકર હવે ગુણઠાણા સકળાદ ઘતીમે પાવે ૪ ૧ પહિલે સુ પાંચમો દરમે ૩ ચૌદમો છોડકર ૪ ગુણઠાણા સામાયિક છેદોપસાપનીય ચારિત્રમેં પાવે ૫ ૧ પહિલે સુ હટ્ટો નયમેંસુ ચૌદમો છોડકર દો ગુણઠાણા અમાપદિ હાસ્યાદિક નોજ્યામેં પાવે ૬ ૧

છાયાના જાણ કિહા ઘણા કિહાં ધોઢા તે જરૂ છે—પુટથી કાચના ઝીંચ પૂર્વે દિશિ ઘણા તે સ્થા માટે ૧ ગોતમ ૧ દીપ છે તે માટે ૧ ૧ અપકાચના ઝીંચ ઉત્તર દિશિ ઘણા તે સ્થાં માટે ૧ માન સરોવર છે તે માટે ૨ ૧ તેડકાચના ઝીંચ પશ્ચિમ દિશિ ઘણા તે સ્થાં માટે ૧ મનુષ્ય ઘણા તે માટે ૩ ૧ ધાયુકાચના ઝીંચ દક્ષિણ દિશિ ઘણા તે સ્થા માટે ૧ તિહાં પોલાડ ઘણી છે તે માટે ૪ ૧ ઘન સ્પતિના ઝીંચ ઉત્તર દિશિ ઘણા છે તે સ્થાં માટે ૧ જેમાં માન સરોવર મધ્યે કમલ છે તે માટે ૫ ૧ મનુષ્ય ઉત્તર ભને દક્ષિણે ધોઢા છે તેદપની પૂર્વે સંખ્યાલ ગુણા અધિક તેહ થી પશ્ચિમમેં વિજ ઘણા તે સ્થા માટે ૧ વિજયપુણ્ડી મનુષ્ય ઘણા તે માટે ૬ ૧

ઉપયોગ ચારે કહા અહા પાવે ૧—૧૬૬ ઉપયોગ સિદ્ધામેં પાવે ૧ ૧ રોચ ઉપયોગ તેરમેં અવદમેં ગુણઠાણે પાવે ૨ ૧ તીન ઉપયોગ પાંચ સાથર મેં પાવે ૩ ૧ ચાર ઉપયોગ ચોરેન્દ્રિય પર્યાસમેં પાવે ૪, પાંચ ઉપયોગ ચેરેન્દ્રિય તેરેન્દ્રિયમેં પાવે ૫ ૧ હવે ઉપયોગ ચોરેન્દ્રિયમેં તથા શ્રાવકમેં પાવે ૬ ૧ સાત ઉપયોગ સામાયિક છેદોપસાપનીય પરિહારવિયુદ્ધિ મુલમસમ્પત્તય ચારિત્રમેં પાવે ૭ ૧ આઠ ઉપયોગ ઘાટે વહતા સિદ્ધ ગતિયામેં નારકી ઝીંચમેં અપયા મત્તમેં મેં પાવે ૮ ૧ નવ ઉપયોગ દેવતા યથાભ્યાસ ચારિત્રમેં

पावे ६, दया उपयोग छद्मस्थ में पावे १०, इग्यार उपयोग संयतीरे अलङ्करीयेमें पावे ११, बारह उपयोग समुच्चय जीवमें पावे १२ ।

जीगरा १४ भेद कहा पावे १—जीवरो भेद नारकी देवतारे पर्यासा में पावे १ । जीवरा भेद सलीपवेन्द्रियमें पावे २, जीवरा भेद समुच्चय नारकीमें देवता में पावे ३ । जीवरा भेद एकेन्द्रियमें पावे ४ । जीवरा भेद भाषक में पावे ५ । जीवरा भेद समदृष्टि में पावे ६ । जीगरा भेद पर्यासा में पावे ७ । जीवरा भेद अणाहारिकमें पावे ८ । जीवरा भेद अदीगरिकरे मिथ में पावे ९ । जीवरा भेद त्रसमें पावे १० । जीवरा भेद भुत इन्द्रिय रे कलङ्कियेमें पावे ११ । जीवरा भेद वादरमें पावे १२, जीवरा भेद सासता पावे १३ । जीवरा भेद समुच्चय जीव में पावे १४ ।

गुणठाणा चीदह कहा लधे—१ गुणठाणो मिय्यात्वी में । २ गुणठाणा विकलेन्द्रिय में । ३ गुणठाणा चित्तव-
यादीके समोसरणमें । ४ गुणठाणा नारकी में देवतामें । ५ गुणठाणा तिर्यचमें । ६ गुणठाणा तीन माठी लेख्यामें । ७ गुणठाणा तेजो पमलेख्या में । ८ गुणठाणा छव हास्यादिक में । ९ गुणठाणा संचलरी ब्रीकमें । १० गुणठाणा सज्जलरे लोभमें । ११ गुणठाणा मोहिनी मे । १२ गुणठाणा छद्मस्थमें । १३ गुणठाणा सयोगीमें । १४ गुणठाणा समुच्चय जीवमें ।

पहिलो गुणठाणो वर्जनि १३ गुणठाणा नित्यमा भवीमें । २ गुणठाणा वर्जनि १२ गुणठाणा नियमा छव पर्याय में मन-
योगीमें । ३ गुणठाणा वर्जनि ११ गुणठाणा क्षायिक समकितमें । ४ गुणठाणा वर्जनि १० गुणठाणा व्रतीमे । ५ गुणठाणा वर्जनि ९ गुणठाणा स यतिमें । ६ गुणठाणा वर्जनि, ८ गुणठाणा अग्रमादी में । ७ गुणठाणा वर्जनि ७ गुणठाणा शुक्ल ध्यान मे । ८ गुणठाणा वर्जनि छव गुणठाणा हास्यादिकरे अलङ्करीये में । ९ गुणठाणा वर्जनि ५ गुणठाणा अवेदी में । १० दस गुणठाणा वर्जनि ४ गुणठाणा अकपाय में । ११ गुणठाणा वर्जनि ३ गुणठाणा क्षिण चीतरागीमें । १२ गुणठाणा

पचति २ गुणठाणा केपली मे । १२ गुणठाणा पचति, १ गुणठाणो ज्योती मे ।

भगवती एव शतक ११ उद्देश नयमे सोल ४—मनुष्य तिर्यचमे वेठा
देवतासे भाउलो पांचे तिके मयद्रव्य देवकी स्थिति जल्य अन्तर्मुहूर्तकी, उदरही प्रोड पूर्वकी । मनुष्य तिर्यचमे वेठा थकां मारकीमे जाणेवालेकु मय द्रव्य नेरीया

जायत्य अन्तर्मुहूर्त की उदरही ३ पल्यकी । मनुष्य तिर्यच देवतामें वेठा थकां मारकीमे जाणेवालेकु मय द्रव्य नेरीया
स्थिति जल्य अन्तर्मुहूर्त की, उदरही २ सागर कासेरी । मनुष्य तिर्यच देवतामें वेठा थकां मारकीमे जाणेवालेकु मय द्रव्य नेरीया
स्थिति जल्य अन्तर्मुहूर्त की उदरही ३ पल्यकी । मनुष्य तिर्यच देवतामें वेठा थकां मारकीमे जाणेवालेकु मय द्रव्य नेरीया
स्थिति जल्य अन्तर्मुहूर्त की उदरही ३ पल्यकी । मनुष्य तिर्यच देवतामें वेठा थकां मारकीमे जाणेवालेकु मय द्रव्य नेरीया
स्थिति जल्य अन्तर्मुहूर्त की उदरही ३ पल्यकी । मनुष्य तिर्यच देवतामें वेठा थकां मारकीमे जाणेवालेकु मय द्रव्य नेरीया

सत्य बहता पृष्णीकायादिमें ४ दण्डक पावे । सराया में २ दण्डक पावे । विकलेन्द्रियमें ३ दण्डक पावे ।

मन्त्रद्वि में ७, अस्त्रीयेमें ८ । तिर्यचमें ६ । भवलयतिमें १० । नपु सक में ११ । तीरछे लोकमें १२ । चक्षुइन्द्रियके
मोगर्भजरे मन योगीमें १४ । पुरुष घेरमें १५ । पंचेन्द्रिय में १६ । चौकीय शरीर में १७, तेजो लेस्यामें १८ । देवतामें १३ ।
सत्यरे अलक्षिय में २० । नीचे लोकमें २१ । माठी लेस्यामें २२ । तीरछे लोकमें २३ । सिद्धारे अलक्षियमें २४ । बसबायमें २६ ।
सत्यरे अलक्षिय में २० । नीचे लोकमें २१ । माठी लेस्यामें २२ । तीरछे लोकमें २३ । सिद्धारे अलक्षियमें २४ । बसबायमें २६ ।

॥ इति प्रस्ताविक घोषडा समाप्तम् ॥
श्री आगरचन्द्र मौरोदान सेठिया जैन प्रयालय, निम्न

॥ अथ १०२ बोलका वासठियो ॥

नामा—जीव गढ़ १ विय काय, जोय वेय य कसाय लेसा य । सम्मत्त नाण दसण, संजय उयभोग आहार ॥ १ ॥

भासग परिस पञ्जत्त, सुगुम सखी भव चरमेय । जीवाय खेत्त वडे, पुगल महइण्डय वेय ॥ २ ॥

यत्त इकीस द्वारके बोल पर वासठ बोल कहा है उसका विस्तार—जीवका १४ भेद, गुणठाणा १४, योग १५, उपयोग १२, लेस्या ६ और एक अत्यबहुत्त्व यह सब मिठकर वासठ बोल हुए । १ जीव द्वार—समुच्चय जीवमें—जीवके भेद १४, गुण स्थानक १४, योग १५, उपयोग १२, लेस्या ६ ॥ २ गतिद्वार—१ नरक गतिमाहि—जीवके भेद तीन—सखी पर्याप्ता, अपर्याप्ता, असखी पचेन्द्रियका अपर्याप्ता । गुणस्थानक चार प्रथमसे । जोग ११—मनके ४, वचनके ४, वेक्रिय १, वैक्रियमिश्र १, कर्मण फाय १ । उपयोग ६—३ ज्ञान, ३ अज्ञान, ३ दर्शन । लेस्या ३ प्रथमसे ॥ २ तिर्यचगति माहि—जीवके भेद १४ गुणठाणा ५ प्रथमसे । योग १३ आहारिक दो नहीं । उपयोग ६—३ ज्ञान, ३ अज्ञान, ३ दर्शन । लेस्या ६ ॥ ३ तिर्यचगती माहि—जीवके भेद २—सखी पर्याप्ता, अपर्याप्ता । गुणस्थानक ५ प्रथमसे । जोग १३—आहारिक दो नहीं । उपयोग ६—३ ज्ञान, ३ अज्ञान

३ दर्शन । लेख्या ६ ॥ ४ मनुष्यमाहि—जीवके भेद ३—सखी पर्याप्त अपर्याप्त, असखी अपर्याप्त । गुणठाणा १४ । योग १५ । उपयोग १२ । लेख्या ६ ॥ ५ मनुष्यो माहि—जीवके भेद २—सखी पर्याप्त अपर्याप्त । गुणठाणा १४ । योग १५ । उपयोग १२ । लेख्या ६ ॥ ६ देवता माहि—जीवके भेद ३—सखी पर्याप्त अपर्याप्त, असखी अपर्याप्त । गुणठाणा ४ प्रथम-से । योग ११—४ मन्त्रके, ४ वचनके, २ धर्मिकिय, १ कार्मणकाय । उपयोग ६—३ ज्ञान, ३ अज्ञान, ३ दर्शन । लेख्या ६ ॥ ७ देवांगना माहि—जीवके भेद २—सखी पर्याप्त अपर्याप्त । गुणस्थानक ४ प्रथमसे । योग ११—४ मन्त्रके, ४ वचनके, २ वैलिय, १ कार्मणकाय । उपयोग ६—३ ज्ञान, ३ अज्ञान, ३ दर्शन । लेख्या ४ प्रथमसे ॥ ८ सिद्धगति माहि—जीवके भेद नहीं । गुणठाणा नहीं । योग नहीं । उपयोग २ केवलमात्रा केवल दर्शन । लेख्या नहीं ॥ अल्प बहुष्य—१ सक्ते धोवा मनुष्यणी २ उससे मनुष्य असख्यात गुणा, ३ नारकी असख्यात गुणा ४ उससे तिर्यचणी असख्यात गुणी, ५ उससे देव असख्यात गुणा, ६ उससे देवांगना संख्यात गुणी, ७ उससे सिद्ध अनन्त गुणा, ८ उससे तिर्यच अनन्त गुणा ॥

३ इन्द्रिय द्वार—१ सइन्द्रिय माहि—जीवके मेद १४ । गुणठाणा १२ प्रथमसे । योग १५ । उपयोग १० देखलनाण के बल दर्शन नहीं । लेख्या ६ ॥ १० पदेन्द्रिय माहि—जीवके मेद ४—सुख पर्याप्ता अपर्वाता, चादर पर्याप्ता अपर्वाता । गुण ठाणा १ प्रथम । योग ५—२ औदारिक, २ वैक्रिय, १ कार्मणकाय । उपयोग ३—२ अज्ञान, १ अचक्षु दर्शन । लेख्या ४ प्रथमसे ॥ ११ देइन्द्रिय माहि—जीवके मेद २ पर्याप्ता अपर्वाता । गुणठाणा २ प्रथमसे । योग ४—२ औदारिक, १ कार्मणकाय, १ व्यवहार भाषा । उपयोग ५—२ ज्ञान, २ अज्ञान, १ अचक्षु दर्शन । लेख्या ३ प्रथमसे ॥ १२ तेश्चन्द्रिय माहि—जीवके मेद २ पर्याप्ता अपर्वाता । गुणठाणा २ प्रथमसे । योग ४—२ औदारिक, १ कार्मणकाय, १ व्यवहार भाषा । उपयोग

५—२ ज्ञान, २ अक्षुब्ध दर्शन । लेश्या ३ प्रथमसे ॥ १३ चौरिन्द्रिय माहि—जीवके भेद २ पर्याप्ता अपर्याप्ता । गुण-
ढाणा २ प्रथमसे । योग ४—२ औदारिक, १ कर्मण, १ व्यवहार भाषा । उपयोग ६—२ ज्ञान, २ अज्ञान, २ दर्शन । लेश्या
३ प्रथमसे ॥ १४ पंचेन्द्रिय माहि—जीवके भेद ४—सत्नी पर्याप्ता अपर्याप्ता, असत्नी पर्याप्ता अपर्याप्ता । गुणढाणा १२ प्रथम-
से । योग १५ । उपयोग १० केवलज्ञान केवल दर्शन नहीं । लेश्या ६ ॥ १५ अनेन्द्रिय माहि—जीवका भेद १ सर्वज्ञ पर्याप्ता ।
गुणढाणा २ तेरहवाँ, चौदहवाँ । योग ५ या ७—२ मन, २ चक्षु, १ औदारिक या ३ काया । उपयोग २ केवलज्ञान केवल
दर्शन । लेश्या १ शुद्ध लेश्या ॥ अत्य यदुत्त्व—१ सबसे थोडा पंचेन्द्रिय, उससे २ चौरिन्द्रिय विशेषाधिक, उससे ३ तेइ द्विय
विशेषाधिक, उससे ४ घेइ द्विय विशेषाधिक, उससे ५ अनेन्द्रिय अनंतगुण, उससे ६ एकेन्द्रिय अनंतगुण, उससे ७ सइन्द्रिय
विशेषाधिक ॥

४ काय द्वार—१६ सकाश माहि—जीवके भेद १४ गुणस्थानक १४, योग १५, उपयोग १२, लेश्या ६ ॥ १७ पृथ्वीकाय
माहि—जीवके भेद ४ सूक्ष्म वादरका पर्याप्ता अपर्याप्ता । गुणढाणा १ मिथ्यात्व । योग ३—२ औदारिक, १ कर्मण काय ।
उपयोग ३—२ अज्ञान, १ अक्षुब्ध दर्शन । लेश्या ४ प्रथमसे ॥ १८ अणुकाय माहि—जीवके भेद ४ पृथ्वी कायवत् । गुणढाणा
१ प्रथम । योग ३ पृथ्वीकायवत् । उपयोग ३ पृथ्वी कायवत् । लेश्या ४ प्रथम से ॥ १९ तेजकाय माहि—जीवके भेद ४ पृथ्वी
कायवत् । गुणढाणा १ प्रथम । योग ३ पृथ्वी कायवत् । उपयोग ३ पृथ्वी कायवत् । लेश्या ३ प्रथमसे ॥ २० वायुकाय
माहि—जीवके भेद ४ पृथ्वी कायवत् । गुणढाणा १ प्रथम । योग ५—२ औदारिक २ चैत्रिय १ कर्मण । उपयोग ३ पृथ्वी-
कायवत् । लेश्या ३ प्रथमसे ॥ २१ वनस्पतिकाय माहि—जीवके भेद ४ पृथ्वीकायवत् । गुणढाणा १ प्रथम । योग ३ पृथ्वी-

कायवत् । उपयोग ३ पृथ्वी कायवत् । लेख्या ४ प्रथम ॥ २२ व्रतकाय माहि—जीवके भेद १० एते प्रियका ४ भेद नहीं । गुणठाणा १४ । योग १५ । उपयोग १२ । लेख्या ६ ॥ २३ अकाय माहि—जीवके भेद नहीं, गुणठाणा नहीं, योग नहीं, उपयोग २ केवलज्ञान केवलदर्शन । लेख्या नहीं ॥ अयं बहुत्व—१ सबसे घोडा व्रतकाय, उससे २ तेजस्काय असंख्यात गुण, उससे ३ पृथ्वीकाय विशेषाधिक, उससे ४ आपकाय विशेषाधिक, उससे ५ वायुकाय विशेषाधिक, उससे ६ अकाय अनंत गुण, उससे ७ धनस्पतिकाय अनंत गुण, उससे ८ सकाया विशेषाधिक ॥

५ योग द्वार—२४ सयोगी माहि—जीवके भेद १४, गुणठाणा १३ प्रथमसे । योग १५, उपयोग १२, लेख्या ६ ॥ २५ मन-योगी माहि—जीवका भेद १ सक्षी पर्याप्त । गुणठाणा १३ प्रथमसे । योग १४ कार्मण नहीं । उपयोग १२ । लेख्या ६ ॥ २६ वचनयोग माहि—जीवके भेद ५—तीन विकले प्रियके पर्याप्ता, सक्षी पञ्चे प्रिय पर्याप्ता, असत्ती पञ्चेन्द्रिय पर्याप्ता । गुणठाणा १२ प्रथमसे । योग १४ कार्मण नहीं । उपयोग १२ । लेख्या ६ ॥ २७ भावजोग माहि—जीवके भेद १४ । गुण-ठाणा १३ प्रथमसे । योग १५, उपयोग १२ लेख्या ६ ॥ २८ अयोग माहि—जीवके भेद १ सक्षी पर्याप्ता । गुणठाणा १ सौंदर्या । योग नहीं । उपयोग २ केवलज्ञान केवलदर्शन । लेख्या नहीं ॥ अत्यं बहुत्व द्वार—१ सबसे घोडा मनोयोगी उससे २ वचन योगी असंख्यात गुण, उससे ३ अयोगी अनंत गुण, उससे ४ काययोगी अनंत गुण, उससे ५ सयोगी विशेषाधिक ॥

६ वेद द्वार—२६ सवेदी माहि—जीवके भेद १४ । गुणठाणा ६ प्रथमसे । योग १५ । उपयोग १० केवलज्ञान केवलदर्शन नहीं । लेख्या ६ ॥ २७ स्त्री वेद माहि—जीवके भेद २ सक्षी पर्याप्ता अपर्याप्ता । गुणठाणा ६ प्रथमसे । योग १३ आहा-

रिक दी नहीं। उपयोग १० केवलज्ञान केवलदर्शन नहीं। लेख्या ६॥ ३१ पुरुषवेद माहि—जीवके भेद २ सत्री पर्याप्ता अपर्याप्ता। गुणठाणा ६ प्रथमसे। योग १५। उपयोग १० केवलज्ञान केवलदर्शन नहीं। लेख्या ६॥ ३२ नपुसकवेद माहि—जीवके भेद १४। गुणठाणा ६ प्रथमसे। योग १५। उपयोग १०। लेख्या ६॥ ३३ अवेद माहि—जीवके भेद १ सत्री पर्याप्ता। गुणठाणा ६ ६ से १४ तक। योग ११—२ वैक्रिय २ आहारिक नहीं। उपयोग ६ अज्ञान ३ नहीं। लेख्या १ शुरु। अल्प बहुत्व द्वार—१ सबसे थोडा पुरुष वेदी, उससे २ त्री वेदी सख्यात गुणी, उससे ३ अवेदी अनंत गुणा, उससे ४ नपुसक वेदी आत गुण, उससे ५ सवेदी विदोयाधिक ॥

७ कषाय द्वार—३४ सकषाय माहि—जीवके भेद १४, गुणठाणा १० प्रथम, योग १५। उपयोग १० केवलज्ञान केवलदर्शन नहीं। लेख्या ६॥ ३५ क्रोधकषाय माहि—जीवके भेद १४। गुणठाणा १० प्रथमसे। योग १५। उपयोग १० केवलज्ञान केवलदर्शन नहीं। लेख्या ६॥ ३६ मानकषाय माहि—जीवके भेद १४। गुणठाणा ६ प्रथमसे। योग १५। उपयोग १०। लेख्या ६॥ ३७ मायाकषाय माहि—जीवके भेद १४। गुणठाणा ६ प्रथमसे। योग १५। उपयोग १०। लेख्या ६॥ ३८ लोभकषाय माहि—जीवके भेद १४। गुणठाणा १० प्रथमसे। योग १५। उपयोग १०। लेख्या ६॥ ३९ अकषाय माहि—जीवके भेद १ सत्री पर्याप्ता। गुणठाणा ४ उपरके। योग ११ ४ मन, ४ वचन, ३ काया। उपयोग ६ तीन अज्ञान नहीं। लेख्या १ शुरु ॥ अल्प बहुत्व—१ सबसे थोडा अकषायी, उससे २ मानकषायी अनंत गुणा, उससे ३ क्रोधकषायी विदोयाधिक, उससे ४ मायाकषायी विदोयाधिक, उससे ५ लोभकषायी विदोयाधिक, उससे ६ सकषायी विदोयाधिक ॥

८ लेख्या द्वार—४० सलेख्या माहि जीवके भेद १४, गुणठाणा १३ प्रथमसे। योग १५। उपयोग १२। लेख्या ६॥

४१ दृष्ट्या लेख्य माहि—जीवके भेद १४। गुणठाणा ६ प्रथमसे। योग १५। उपयोग १०। लेख्य १ दृष्ट्या ॥ ४२ नील-
लेख्य माहि-जीवके भेद १४। गुणठाणा ६ प्रथमसे। योग १५। उपयोग १०। लेख्य १ नील ॥ ४३ कापोत लेख्य
माहि-जीवके भेद १४, गुणठाणा ६ प्रथमसे। योग १५। उपयोग १०। लेख्य १ कापोत ॥ ४४ तेजोलेख्य माहि-जीवके
भेद ३ २ सत्री पर्यासा अपर्यासा, १ बाहर एवेन्द्रिय अपर्यासा। गुणठाणा ७ प्रथमसे। योग १५। उपयोग १०। लेख्य १
तेजो ॥ ४५ पललेख्य माहि जीवके भेद २ सत्री पर्यासा अपर्यासा। गुणठाणा ७ प्रथमसे। योग १५। उपयोग १०। लेख्य
१ पल ॥ ४६ शुक्लेख्य माहि-जीवके भेद २ सत्री पर्यासा अपर्यासा। गुणठाणा १३ प्रथमसे। योग १५। उपयोग १२।
लेख्य १ शुक्ल ॥ ४७ अलेख्य माहि-जीवके भेद १ सत्री पर्यासा। गुणठाणा १ चीरहवा। योग नहीं। उपयोग २ केव
लमाणा केवलदर्शन। लेख्य नहीं। मध्य धातुत्व-१ सबसे धीजा शुक्ल लेख्यी, उससे २ पललेख्यी संख्यात गुणा, उससे ३
तेजो लेख्यी सख्यात गुणा, उससे ४ अलेख्यी अनन्तगुणा, उससे ५ कापोतलेख्यी अनन्तगुणा, उससे ६ नील लेख्यी विशेषाधिक,
उससे ७ दृष्ट्यालेख्यी विशेषाधिक, उससे ८ सलेख्यी विशेषाधिक ॥

६ समकित द्वार ४८ सम्यग्दृष्टिमाहि जीवके भेद ६-वेन्द्रिय, वेन्द्रिय, वीरिन्द्रिय, असत्री पंचेन्द्रिय इन चारका अपर्यासा,
सत्री पंचन्द्रिय का पर्यासा अपर्यासा। गुणठाणा १२ पक्षिण तीजा छोडकर। योग १५। उपयोग ६ तीन अज्ञान नहीं। लेख्य
६ ॥ ४६ सात्वादनमाहि जीवके भेद ६ सम्यग्दृष्टिवत। गुणठाणा १ दूजा। योग १३ आहारिक दो नहीं। उपयोग ६-३नाण ३
दर्शन। लेख्य ६ ॥ ५० उपशमसम्यक्त्वाहि जीवके भेद २ सत्री पर्यासा अपर्यासा। गुणठाणा ८-४ से ११ तक। योग १५। उप
योग ७-४ ज्ञान ३ दर्शन। लेख्य ६ ॥ ५१ क्षयोपशम तथा वेदक माहि जीवके भेद २ सत्री पर्यासा अपर्यासा, गुणठाणा ४ ४ से

७ तक । योग १५ । उपयोग ७—४ ज्ञान ३ दर्शन । लेख्या ६ ॥ ५२ ह्यायिक समकित माहि—जीवके भेद २ संज्ञी पर्याप्ता अपर्याप्ता । गुणठाणा ११—४ से १४ तक । योग १५ । उपयोग ६ तीन अज्ञान नहीं । लेख्या ६ ॥ ५३ मिथ्यात्व द्वष्टि माहि जीवके भेद १४ । गुणठाणा प्रथम । योग १३ आहारिक दो नहीं । उपयोग ६-३ अज्ञान, ३ दर्शन । लेख्या ६ ॥ ५४ सममिथ्याद्वष्टि माहि—जीवके भेद १ संज्ञी पर्याप्ता । गुणठाणा १ तीजा । योग १०—४ मन ४ वचन १ औदारिक १ वैक्रिय । उपयोग ६—३ अनाप ३ दर्शन । लेख्या ६ ॥ अल्प बहुत्व—सबसे थोडा साक्षादनी, उससे २ उपशमी संख्यात गुणा, उससे ३ सम्यग् मिथ्यात्वो संख्यात गुणा, उससे ४ क्षयोपशम वेदक संख्यात गुणा, उससे ५ ह्यायिक अनंत गुणा, उससे ६ सम्यग्द्वष्टि विशेषाधिक, उससे ७ मिथ्यात्व अनंतगुणा ॥

१० ज्ञान द्वार ५५ सनाणीमाहि—जीवके भेद ६ सम्यग्द्वष्टिवत् । गुणठाणा १२ पहिला तीजा नहीं । योग १५ । उपयोग ६ तीन अज्ञान नहीं । लेख्या ६ ॥ ५६ मतिज्ञानीमाहि—जीवके भेद ६- सम्यग्द्वष्टिवत् ॥ गुणठाणा १० पहिला तीजा तेरहवा चौदहवां नहीं योग १५ । उपयोग ७—४ ज्ञान ३ अज्ञान । लेख्या ६ ॥ ५७ धृतज्ञानी माहि—जीवके भेद ६ सम्यग्द्वष्टिवत् । गुणठाणा १० मति-ज्ञानीवत् । योग १५ । उपयोग ७—४ ज्ञान ३ अज्ञान । लेख्या ६ ॥ ५८ अवधिज्ञानी माहि—जीवके भेद २ संज्ञी पर्याप्ता अपर्याप्ता । गुणठाणा १० मतिज्ञानवत् । योग १५ । उपयोग ७—४ ज्ञान ३ अज्ञान । लेख्या ६ ॥ ५९ मन-पर्यवक्षानी माहि जीवके भेद १ संज्ञी पर्याप्ता । गुणठाणा ७ छ से बारह तक । योग १४ कार्मण योग नहीं । उपयोग ७ । लेख्या ६ ॥ ६० केवलज्ञानी माहि—जीवके भेद १ संज्ञी पर्याप्ता । गुणठाणा २ तेरहवां चौदहवां । योग ५ या ७—२ मन, २ वचन, १ औदारिक या ३ काया । उपयोग २ केवल-नाप केवल दर्शन । लेख्या १ परमशुद्ध ॥ ६१ मतिअज्ञानी माहि—जीवके भेद १४ । गुणठाणा २ पहिला तीजा । योग १३ आहारिक

क्षी नहीं । उपयोग ६—३ अज्ञान ३ दर्शन । लेख्या ६ ॥ “२ श्रुत अज्ञानी माहि सब धोल मति अज्ञानीवत् ॥ ६३ अनाणी माहि—सब धोल मति अज्ञानवत् ॥ ६४ विम ७ अनाणी माहि—जीवके मेद २ संज्ञा पर्याप्त अपर्याप्त । गुणटाणा २ पहिला तीजा । योग १३ । उपयोग ६ । लेख्या ६ ॥ अत्य बहुत्व—१ सबसे थोडा मात्र पर्यय ज्ञानी, उससे २ अवधिज्ञानी अस प्यात गुणा, उससे ३ मतिज्ञानी और ४ श्रुत ज्ञानी दोनों तुल्य (परापर) विशेषाधिक, उससे ५ विमर्गज्ञानी अस प्यात गुणा, उससे ६ केवल ज्ञानी अनन्तगुणा, उससे ७ समानी विशेषाधिक, उससे ८ मति अज्ञानी ६ श्रुत अज्ञानि दोनों परस्पर तुल्य अनन्तगुणा, उससे १० अनाणी विशेषाधिक ॥

दर्शन द्वार—६५ चक्षुस्स न माहि—जीवके मेद ६—२ धीरिन्द्रियका ४ पंचेन्द्रियका । गुणाटाणा १२ प्रथमसे, मात्र १४ कार्मण नहीं, उपयोग १० केवलमात्र केवलदर्शन नहीं । लेख्या ६ ॥ ६६ अक्षुस्स न माहि—जीवके मेद १४ गुणटाणा १२ प्रथमसे, योग १५ उपयोग १० लेख्या ६ ॥ ६७ अवधि दर्शन माहि—जीवके मेद २ स जी पर्याप्त अपर्याप्त, गुणटाणा १२ प्रथमसे, योग १५ उपयोग १०, लेख्या ६ ॥ ६८ केवलदर्शन माहि—नीयका मेद १ स जी पर्याप्त, गुणटाणा २ तेरहवां चौदहवां, योग ५ या ७—२ मात्र २ यचन १ धीरारिक या ३ काया उपयोग २ केवलमात्र केवलदर्शन लेख्या १ शुद्ध ॥ अत्य बहुत्व—१ सबसे थोडा अवधि दर्शनमाहि, उससे २ चक्षुस्स न अस प्यात गुणा उससे ३ केवलदर्शन अन तगुणा, उससे ४ अक्षुस्स न अनन्तगुणा ॥

१२ स यतद्वार—६६ स यती माहि—जीवके मेद १ स जी पर्याप्त, गुणटाणा ६—६से १४ तक, योग १५ उपयोग ६ तीन अज्ञान नहीं । लेख्या ६ ॥ ७० मामाधिक चारित्र माहि—जीवके मेद १ स जी पर्याप्त, गुणटाणा ४ ६ से ६ तक, योग १४ कार्मण योग नहीं, उपयोग ७ चार ज्ञान तीन दर्शनके, लेख्या ६ ॥ ७१ छेदोपस्थापनीय माहि जीवके मेद १ स जी पर्याप्त, गुणटाणा ४—६

से ६ तक, योग १४ कर्मणयोग नहीं, उपयोग ७—४ ज्ञान ३ दर्शन, लेख्या ६॥ ७२ परिहार विशुद्धि चारित्र्य माहि जीवके भेद १ सञ्जी पर्याप्ता गुणठाणा २ छद्वा सातर्वा योग ६—४ मन, ४ वचन १ औदारिक, उपयोग ७ ४ ज्ञान ३ दर्शन । लेख्या ३ नेजो पद्म शुक्ल ॥ ७३ सूक्ष्म स पराय माहि जीवके भेद १ सञ्जी पर्याप्ता, गुणठाणा १ दशर्वा, योग ६ ४ मन ४ वचन १ औदारिक, उप योग ७—४ ज्ञान ३ दर्शन, लेख्या १ शुक्ल ॥ ७४ यथाख्यात चारित्र्यमाहि—जीवके भेद १ सञ्जी पर्याप्ता, गुणठाणा ४ ११ से १४, योग ११-४ मन ४ वचन ३ काया, उपयोग ६ तीन अज्ञान नहीं, लेख्या १ शुक्ल ॥ ७५ स यतास यतमाहि-जीवके भेद १ सञ्जी पर्याप्ता, गुणठाणा १ पाँचर्वा, योग १२-२ आहारिक १ कर्मण छोडकर, उपयोग- ६ ३ नाण ३ दर्शन, लेख्या ६ ॥ ७६ अस यती माहि-जीवके भेद १४, गुणठाणा ४ प्रथमसे, योग १३ आहारिक दो नहीं, उपयोग ६-३ ज्ञान ३ अज्ञान ३ दर्शन, लेख्या ६ ॥ ७७ नोसंयत नो अस यत नोस यतास यत माहि-जीवके भेद नहीं, गुणठाणा नहीं, योग नहीं, उपयोग २ केवल ज्ञान केवल दर्शन, लेख्या नहीं ॥ अल्प बहुत्व सबसे छोडा १ सूक्ष्मस पराय चारित्री, उससे २ परिहारविशुद्धि स ख्यात गुणा, उससे ३ यथाख्यात चारित्री स ख्यात गुणा, उससे ४ छेदोपस्थापनिक स ख्यातगुणा, उससे ५ सामायिकचारित्री स ख्यातगुणा उससे ६ स यति विशेषाधिक, उससे ७ स यतास यति अस ख्यात गुणा, उससे ८ नोस यति नोक्स यति नोसयतास यत अनत गुणा, उससे ९ अस यति अनतगुणा ॥

१३ उपयोग द्वार—७८ साकार उपयोगमाहि-जीवके भेद १४, गुणठाणा १४, योग १५ उपयोग १२ लेख्या ६ ॥ ७९ अनाकार उपयोग माहि-जीवके भेद १४ गुणठाणा १३ दशर्वा नहीं, योग १५, उपयोग १२ लेख्या ६ ॥ अल्प बहुत्व—१ सबसे छोडा अनाकार उपयोगी, उससे २ साकार उपयोगी सख्यात गुणा ॥

१४ आहार द्वार—८० आहारिक माहि—जीवके भेद १४ गुणठाणा १३ प्रथमसे, योग १४ कार्मण नहीं उपयोग १२, लेख्या ६ ॥ ८१ अणमाहारिक माहि—जीवके भेद ८—७ अपर्याप्त १९ की वैवेन्द्रिय पर्याप्ता, गुणठाणा ५ वह १ २ ४ १३ १४ । योग १ कार्मण । उपयोग १० मन पर्यवसान और चक्षुदर्शन नहीं । लेख्या ६ ॥ अल्प बहुत्व सबसे घोडा अणाहारिक, उससे आहारिक संख्यात गुणा ॥

१५ भासक द्वार—८२ भासक माहि जीवके भेद ५ तीन विकलेन्द्रिय और सभी असशी पचेन्द्रिय इन पाचोंका पर्याप्ता । गुणठाणा १३ प्रथमसे । योग १४ कार्मण नहीं, उपयोग १२, लेख्या ६ ॥ ८३ अमासकमाहि—जीवके भेद १० तीन विकलेन्द्रिय और असस्त्री वैवेन्द्रिय नहीं, गुणठाणा ५ वह १ २ ४-१३-१४ । योग ५ २औरारिक २ वैक्रिय १ कार्मण । उपयोग १० णा ११ मन ५ चक्षुद नहीं या मन-पर्यवसान नहीं । लेख्या ६ ॥ अल्प बहुत्व १सबसे घोडा भासक, उससे २ अमासक धनत गुणा ॥

१६ परित द्वार ८४ परितमाहि जीवके भेद १४, गुणठाणा १४ योग १५, उपयोग १५, लेख्या ६ ॥ ८५ अपरितमाहि—जीवके भेद १४, गुणठाणा १ प्रथम, योग १३ आहारिक दो नहीं, उपयोग ६-३ णा ३ दर्शन, लेख्या ६ ॥ ८६ जो परित जो अपरितमाहि जीवके भेद नहीं, गुणठाणा नहीं योग नहीं उपयोग २ केवलज्ञान केवल दर्शन, लेख्या नहीं ॥ अल्प बहुत्व-१सबसे घोडा परित उससे २ जो परित जो अपरित अततगुणा, उससे ३ अपरित अततगुणा ॥

१७ पयास द्वार ८७ पर्याप्तमाहि जीवके भेद ७, गुणठाणा १४, योग १५, उपयोग १२, लेख्या ६ ॥ ८८ अपर्याप्तमाहि जीवके भेद ७ गुणठाणा ३ प्रथम दृजा वीया, योग ५ २ औदारिक २ वैक्रिय १ कार्मण, उपयोग ६ ३ ज्ञान ३ अज्ञान ३ दर्शन । लेख्या ६ ॥

८६ नो पर्याप्ता नो अपर्याप्ता माहि—जीवके भेद नहीं, गुणठाणा नहीं, योगनहीं, उपयोग २ केवल नाण केवल दर्शन, लेख्या नहीं ॥
अल्प बहुत्व १ सबसे थोडा नो पर्याप्त नो अपर्याप्त, २ उससे अपर्याप्त अनंतगुणा, उससे ३ पर्याप्त सख्यात गुणा ॥

१८ सूक्ष्म द्वार—६० सूक्ष्ममाहि-जीवके भेद २ एकेन्द्रिय पर्याप्ता अपर्याप्ता, गुणठाणा १ प्रथम, योग ३ २ औदारिक १ कार्मण, उपयोग ३ २ अनाण १ अचक्षुदर्शन, लेख्या ३ प्रथमसे ॥ ६१ बाहरमाहि जीवके भेद १२ सूक्ष्म एकेन्द्रिय २ नहीं, गुणठाणा १४ योग १५, उपयोग १२ लेख्या ६ ॥ ६२ नो सूक्ष्म नो बाहरमाहि जीवके भेद नहीं, गुणठाणा नहीं, योग नहीं, उपयोग २ केवल नाण केवल दर्शन लेख्या नहीं ॥ अल्प बहुत्व द्वार-सबसे थोडा १ नो सूक्ष्म नो बाहर, उससे २ बाहर अनंतगुणा, उससे ३ सूक्ष्म सख्यात गुणा ॥

१६ संक्षी द्वार—६१ संक्षीमाहि-जीवके भेद २ संक्षी पर्याप्ता अपर्याप्ता गुणठाणा १२ प्रथमसे, योग १५, उपयोग १० केवल नाण केवलदर्शन नहीं, लेख्या ६ ॥ ६४ असन्नी माहि जीवके भेद १२ संक्षीका २ भेद नहीं, गुणठाणा २ प्रथमसे ॥ योग ६-२, औदारिक २ वैक्रिय १ कार्मण १ व्यवहारसाया ॥ उपयोग ६-२ ज्ञान, २ अज्ञान, २ दर्शन ॥ लेख्या ४ प्रथमसे ॥ ६५ नो संक्षी नो असंक्षी माहि जीवके भेद १ संक्षी पर्याप्ता ॥ गुणठाणा २ तेरहवां चौदहवां ॥ योग ५ या ७-२ मन, २ ध्वचन १ औदारिक या ३ काया ॥ उपयोग २ केवल नाण केवल दर्शन ॥ लेख्या १ शुक्र ॥ अन्य बहुत्व सबसे थोडा १ संक्षी, उससे २ नोसंक्षी नो असंक्षी अनंत गुणा, उससे ३ असंक्षी अनंत गुणा ॥

२० भव्य द्वार—६६ भव्य माहि-जीवके भेद १४, गुणठाणा १४, योग १५, उपयोग १२, लेख्या ६ ॥ ६७ अभवी माहि जीवके भेद १४, गुणठाणा १ प्रथम, योग १३ आहारिक दो नहीं ॥ उपयोग ६-३ अज्ञान ३ दर्शन ॥ लेख्या ४ ॥ ६८ नो भवी नो अभवी माहि

जीवने भेद नहीं गुणठाणा नहीं, योग नहीं, उपयोग २ वैयल नाण वैयल दर्शन, लेख्या नहीं ॥ अलग यदुत्तर सयसे छोडा १ अभी, उससे २ जो मयी नो अमयी अनतगुण, उससे ३ मयी अनन्त गुण ॥

२१ ग्राम द्वार ११ घरममाहि आउके भेद १४, गुणठाणा १४ योग १५, उपयोग १२, लेख्या ६ ॥ १०० अचरममाहि-जीवने भेद १४ गुणठाणा १ प्रथम । योग १३ आद्यात्मिक दो नहीं । उपयोग ८ ३ अज्ञान ४ दर्शन १ केवलगाण । लेख्या ६ ॥ अन्य यदुत्तर १ सयसे छोडा अचरम उससे २ चरम अनन्त गुणा ॥

१०१ समुच्छिन्ने मनुष्यमाहि-जीवने भेद १ असन्तो मरयाता गुणठाणा १ प्रथम, योग ३ कर्मण आदिक औदारिक मिथ्र । उपयोग ४ २ अनाण २ दर्शन । लेख्या ३ प्रथमसे ॥ १०२ समुच्छिन्ने तिर्यच माहि-जीवने भेद २ असन्ती पर्याता अपर्याता । गुणठाणा २ प्रथमसे । योग ४ २ औदारिक १ कामेण १ व्यवहार भाणा । उपयोग ३ २ अनाण १ दर्शन । लेख्या ३ प्रथमसे ॥ अलग यदुत्तर सयसे छोडा १ समुच्छिन्ने मनुष्य, उससे २ समुच्छिन्ने तिर्यच अस सयात गुणा ॥

॥ इति १०२ बोल का वासठिया समाप्तम् ॥

श्री अगरचद भैरोंदान सेठिया जैनप्रणालय वीकानेर (राजपूताना)
॥ शुभं भवतु ॥

“४ समकित के ग्यारह द्वार को थोकडो”

१ नाम द्वार	क्षायिक	उपशम	क्षयोपशम	वेदक
२ लक्षण द्वार	७ प्रकृति क्षणों अन तानु कधी ४ मोच, मान माया, मोच, सत्यक मोहिनी, मिश्र मोहिनी, मिथ्यात्व मोहिनी	७ प्रकृति उपशमावे	४ प्रकृति क्षणावे १ उपशमावे २ क्षणावे तथा उपशमावे	१ वेदे ६ क्षणावे तथा उप- शमावे
३ आवण पावण द्वार	मनुष्य गतिमें आवे ४ गतिमें पावे	४ गति में आवे ४ गति में पावे	४ गति में आवे ४ गति में पावे असंख्याता	४ गति में आवे ४ गति में पावे असंख्याता
४ द्रव्य प्र- माण द्वार	अन्त	असंख्याता	असंख्याता	असंख्याता
५ स्थिति द्वार	सादि अन्त, आवि है अन्त नहीं	स्थिति अ तर्मुत्तं	अन्त अन्त मुहूर्त, उत्कृष्ट ६६ सागर भाजेरी	अन्त अन्त मुहूर्त, उत्कृष्ट ६६ सागर भाजेरी
६ विच्छेद द्वार	मिच्छेद नहीं	मजना	विच्छेद नहीं	विच्छेद नहीं

श्री अग्रचन्द्र भरोदान सेठिया जैनग्रन्थालय विकानेर ।

७ निरंतर द्वार	८ समय तक निरंतर आये	आवलिकारे असंख्यात में भाग	आवलिकारे असंख्यात में भाग
८ साधतार द्वार	आतरो नहीं	अधन्य अतमंहुत्तं, उत्तरे देश उणो आधा पुद्गल परावर्त्तन वत्तन	अधन्य अतमंहुत्तं, उत्तरे देश उणो आधा पुद्गल परावर्त्तन
९ आक्षेप द्वार	एक बार आया पीछे जाये नहीं	एक भय आधो अधन्य एक बार उत्तरे प्रत्येक हजार बार, घणा भय आधो अधन्य दो बार उत्तरे असंख्यातिवार	क्षय उपशम मार्फिक
१० स्पर्श ना द्वार	समुच्चय लोक फरसे	७ राज माठेरो फरसे	७ राजमाठेरो फरसे
११ अल्प बहुल्य द्वार	क्षायक रा घणी अमन्ता	क्षय उपशम रा घणी असं ख्यात गुणा	वेदक सम्यक्तरा घणी संख्यात गुणा

साधुके ५० अनाचार-सूत्र श्री दशवैकालिक अध्ययन तीजामें

१ आधाकर्मा नत्र पात्र मरुत और आहारादिक साधुने निमित्त बनाया हुआ भोगवे ते अनाचार । २ साधुके लिये मोल लाया हुआ भोगने ते अनाचार । ३ नित्य प्रति एक घरका आहारादि भोगवे ते अनाचार । ४ सामने लाया हुआ आहारादिक भोगवे ते या दूजे गामसे भंगाय दे ते अनाचार । ५ रात्रो भोजन करे ते अनाचार । ६ स्नान करे ते अनाचार । ७ गन्ध तैल फुल्ले कपूरादिककी सुगन्ध लेवे ते अनाचार । ८ पुष्प मालादि पहिरे ते अनाचार । ९ पत्तादिसे हज्जा लेवे ते अनाचार । १० स्निग्ध आहार पाणी धृत गुडादिक ग्रामी रखे ते अनाचार । ११ गृहस्थीके भाग्य (नरत्न) में जीमे ते अनाचार । १२ राजपिण्ड आहार भोगने ते अनाचार । १३ क्रिमि-शुद्ध सन्नकार (दानशाला) रो आहारादिक भोगने ते अनाचार । १४ मर्दन करे ते अनाचार । १५ दात पराले, तुल्य बोधे ते अनाचार । १६ गृहस्थी की सुख सारा पूछे ते अनाचार । १७ काच प्रमुत्तमें सुख देखे ते अनाचार । १८ जुवा रमे ते अनाचार । १९ चोपट पास सनरजादि खेले ते अनाचार । २० हज्ज माथे उपर धारण करे ते अनाचार । २१ दगा औपम्य तथा घैद्य भी करे ते अनाचार । २२ पनारखो मोना अदि पदरे ते अनाचार । २३ अग्नि को आरुम समारुम करे ते अनाचार । २४ सडकातर के घर का पिण्ड (असण्यादिक) भोगवे ते अनाचार । २५ गृहस्थीके मादो तकिया आदि आसण पर बैठे ते अनाचार । २६ गृहस्थीके माचे, पलग, ढोलोये पर बैठे ते अनाचार । २७ गृहस्थीके घरे विमार, तपशी, अशक्ति, यह तीन कारण निना बैठे ते अनाचार । २८ शरीरके पीठी, मालिस वगैरह करे ते अनाचार । २९ गृहस्थासे वैयावद्य करावे तथा गृहस्थीकी वैयावद्य करे ते अनाचार । ३० जाति कुठ वताय के आजोयका करे ते अनाचार । ३१ मिश्र पाणी (अथ कच्चो पाणी) भोगवे ते अनाचार । ३२ रोग पीडा आया गृहस्थी रो देवता रो शरणो वछे ते अनाचार । ३३ मूलो, आदो काचो भोगने ते अनाचार । ३४ शेलडी खड प्रमुख भोगने ते अनाचार । ३५ रुद्र प्रजकद सूरण कदादिक भोगवे ते अनाचार । ३६ मूल घृक्षादिक भोगवे ते

अनाचार । ३७ फल अनार नीम्बु आदि भोगवे ते अनाचार । ३८ धीज तिलादि भोगवे ते अनाचार । ३९ सचित संचल लूण भोगवे ते अनाचार । ४० सिधो लूण भोगवे ते अनाचार । ४१ पारी लूण भोगवे ते अनाचार । ४२ रोम लूण (रोमक क्षार) भोगवे ते अनाचार । ४३ सामुद्रका लूण काचा भोगवे तो अनाचार । ४४ काग लूण पत्रतका काचा भोगवे ते अनाचार ४५ कपडोंके धूप लेवे ते अनाचार । ४६ यमन (उलटो) करे ते अनाचार । ४७ गला हेठला केश लेवे ते अनाचार । ४८ धिरेचन (जुलान) लेवे ते अनाचार । ४९ आपमें अङ्गन लगावे ते अनाचार । ५० दात ओष्ठ (होठ) रंगे मोसो लगावे ते अनाचार । ५१ शरीरके तैलादि मालिश करे ते अनाचार । ५२ शरीरकी शुश्रूषा विमूषा करे ते अनाचार

नोट — २५ धो २६ धो अनाचार कोई भेला नो कहे छै, ३३ धो अनाचार काचे मुलेरो तथा आवेरो कोई अलग अलग कहे छै ।

७० गुण करण सित्तरीके

गाथा—पिण्डविसोही सुमर भावणा पढिमा य इ दिय निरोहो । पडिलेहणा गुत्तिओ अभिगह वैयकरण तु ॥ १ ॥

पिण्डवियुक्तिके ४ भेद—१ जाहार पाणो सुग्गडो सोपारी आदि फासुन निजोंव विधियुक्त लेवे । २ यस्त्र सूत या ऊनके सफेद रङ्गके कपडे मानयेत (सायुको ७२ हाथ और सा० गोको १६ हाथ) निर्दाय ग्रहण करे । ३ काष्ठ तुम्बे प्रमुखका पात्र यथाविधि लेवे ४ अठारे प्रकारके निर्दाय स्थानक मालिकको आछासे लेवे यह चार शुद्धि साचे ।

पाच सुमति युक्त सदा रहे । १२ भावना भावे । १२ पडिमा धारे । ५ इन्दिय वसमें करे । २५ पडिलेहणा । ३ गुत्ति । ४ अभिग्रह—द्रव्य क्षे न काल भाव । यह सब मिलकर ७० गुण करण सित्तरी के हुए ।

७० गुण चरण सित्तरीके

गाथा—पयसमण धम्म संयम वेयावच्च च वम गुत्तिओ । नाणाइ नीयतव कोहोनिग्गहाइ चरणमेयं ॥ २ ॥

५ महायत । १० प्रकार का साधु धर्म । ११ प्रकार का संगम । १० वैयाक्य करे । ६ बाह्य शुद्ध प्रत्यक्ष करे । ३ ज्ञान दर्श । १ चरित्र स्तम्भों मारधे । १२ भेदे तर करे । ४ कथाय निग्रह करे । यह सप्त मिलकर ७० गुण चरण सितरीके हुए ।

पाच व्यवहार श्री भगवती सूत्रमे कहे सो लिखते हैं ।

पञ्च व्यवहार पणत्ता तंजहा—आगमो सूय आणा धारणा जीय ।

१ पहले आगम व्यवहार—श्रीतीर्थकर केवल ज्ञानी चौदह पूर्व ज्ञानके धारक यावत् दश पूर्णधारी प्रवर्तते हो उनकी भाषामें प्रवर्तें सो आगम व्यवहार । २ दूसरो सूत्र व्यवहार—आचारागदिक सूत्रमें कहे मुजब प्रवर्तें सो सूत्र व्यवहार । ३ तीजो आणा व्यवहार—जिस धक जो आचार्य प्रवर्तते हो उनकी आज्ञा में प्रवर्तते सो आणा व्यवहार । ४ चौथो धारण व्यवहार—पूर्व परंपरासे चला आया आचार गोचारादिकमें प्रवर्तें तथा गुरु आदिकसे धारणाकर रखी हो उस मुजब प्रायश्चित्त देवे सो धारणा व्यवहार । ५ पाचमो जीत व्यवहार—द्रव्य क्षेत्र काल भायमें फरक पडा देख, या संयथानादिक को होणता देख आचार्य और चतुर्विध सध मिलकर जो निर्बंध मर्यादा बाधे उस मुजब प्रवर्तें सो जीत व्यवहार । इन पाच प्रकारके व्यवहार मुजब प्रवर्तता हुआ साधु भगवतकी भाषाका उल्लेख नहीं करता है ।

३४ असज्जायके नाम—

१ उक्तावाय—तारा तुटें तो एक पोहर असज्जाय । २ दिशावाहा—रुजूर और शामको विशा लाल रंगकी रहे यहाँ तककी असज्जाय । ३ गजिया—गर्जना होवे तो एक पोहर असज्जाय । ४ मिज्जुए—विजली होनेसे होय पोहर (प्रहर) असज्जाय, परन्तु गाज और विजलीकी आर्द्रा नक्षत्रसे स्वाति नक्षत्र त्रिज असज्जाय न गिणना और सदा गिणना ।

५ निम्नाप ऋद्धेनो अयन्य आठ, उत्पद्य गारह प्रहर को असम्भाय । ६ जुने—रातचद शुक्र पक्षकी पडिवा द्वितीया तृतीया व तीन रात्रिमें चन्द्रमा रहे वहा तरुको असम्भाय । कोई एक प्रहर को भी कहते हैं । ७ जरकाले—आकाशमें मनुष्य पशु पिशाचादिकने चिन्ह दिते वहा तरु असम्भाय । ८ शुभीए—रात्री धूवर पडे रहा तरु असम्भाय । ९ महिये ध्येत धूवर (मेसरया) पडे वहा तरु असम्भाय । १० डगए आकाशमें धून्का गोटा (गोटा) चडा हुवा दिले वहा तरु असम्भाय । १२ स्त्रीणी—रक्त (गोही) दृष्टिमें आवे वहा तरु असम्भाय । १३ अरणी ग्रसो (हड्डो) दृष्टिमें आवे वहा तरु असम्भाय । १४ उचार—विद्या दृष्टिमें आवे वहा तरु असम्भाय । १५ सममान—यमशानके चारो तरफ सौ सौ हाथ असम्भाय । १६ रायमरणे—राजाके मृत्यु वाव दूसरा राजा बैठे वहा तरु या हडताल रहे वहा तरु असम्भाय । १७ रायतुगण—राजाओंका युद्ध होवे रहा तरु असम्भाय । १८ व इरगणे—चन्द्रग्रहण होय तो जग्य ६ उत्पद्यो १२ प्रहर, खग्रास होनेसे १६ प्रहर, घाडा ग्रहण होनेसे कमी काठ असम्भाय समझना । १९ सुरोवरणे—सूर्यग्रहण होय तो १२ प्रहर, असम्भाय । २० उजसतो—पर्वेन्द्रियका कलेजर निर्जोय देह पडा होवे तो चारो तरफ सौ सौ हाथ असम्भाय । २१ आश्विन सुदि पूर्णिमा असम्भाय । २२ कार्तिक यदि प्रतिपदा भस्म सम्भाय । २३ कार्तिक सुदि पूर्णिमा असम्भाय । २४ मृगशीर्ष यदि प्रतिपदा असम्भाय । २५ चैत्र सुदी पूर्णिमा असम्भाय । २६ वैसाख यदा प्रतिपदा असम्भाय । २७ भाषाढ सुदी पूर्णिमा असम्भाय । २८ भाषण यदि प्रतिपदा असम्भाय । २९ भाद्र सुदि पूर्णिमा असम्भाय । ३० आश्विन यदि प्रतिपदा असम्भाय । ये वृक्ष दिन और रात संपूर्ण असम्भाय गालना । ३१ प्रभात, ३२ दो प्रहर (मयान), ३३ शाम ३४ मध्य रात्री, ये ४ वक्त शेषकी (छेहलो) ३१ ३२ ३३ ३४ वो घण्टेक मुहूर्त असम्भाय ये ३४ असम्भाय टालकर सूत्र भणना ।

॥ शुभ भवतु ॥

ॐ शान्ति ।

शान्ति ॥ शान्ति ॥

श्री भगवन्द भैरोंदेन सेठिंगा अैन प्रथाग्य चौकानेर (राजपूताना)

॥ अथ साधुके आहारका १०६ दोष ॥

(साधुको अकल्पनीक)

अथ उद्गमका १६ दोष—(दातारसुं लागे)

मूल गाथा-आहाकम्मुदे^१सिय पूईकम्मे^२य मीसजाए^३य । ठवणा^४पाहुडियाए^५पाओअर^६कीय^७पामिच्चे^८। १।

परियट्टि^९ए अभिहडे^{१०}उन्निमन्ने^{११}मालोहडे^{१२}इय । अच्चिज्जे^{१३}अणिसिद्धे^{१४}अज्झोयरए^{१५}य सोलसमे^{१६}। २।

१ आहाकम्मे (आधाकर्मो)—साधुके निमित्त बनावे ते दोष । २ उदेसिय (औदेसिक)—
नित साधुके लिये आधाकर्मो आहार बनाया है वही साधु ले तो उसको आधाकर्मो दोष लगे । और दूसरा साधु ले तो उदेसिय
दोष लगे । ३ पूईकम्मे (पूतिकर्म)—सूजता आहार माहि अथाकर्मोका भ शमात्र भी मिलजाय 'हुजार घरके आतरे
भी आधाकर्मो आहारका अ शमात्र मिल जाय' ते दोष । ४ मीसजाए (मिश्रजाते)—आपरे वास्ते और साधुरे वास्ते भेल
राधे ते दोष । ५ ठवणा (स्थापना)—साधु निमित्त बसनादि आहार स्थापकर रखे, दूसरे को न दे ते दोष । ६ पाहुडियाए
(प्राभृतिका)—साधु अर्थ पाचना (महमान) आधा पाछा करते ते दोष । ७ पाओअर (प्राटुस्करण)—अ धारा

माहि प्रकाश करके देवे ते दोष । ८ कीय (क्रीत)—साधु निमित्त आहार वस्त्र और पात्र आदि मोल लाकर तथा उपाश्रय देवाता लेकर देवे ते दोष । ९ पामिच्चै (अपमित्य)—साधु निमित्त आहारादि उधार लाकर देवे ते दोष । १० परियट्टिण् परिवर्त्ति त)—साधु निमित्त अपनी वस्तु देकर बदलेमें दूसरी वस्तु लाकर देवे ते दोष । ११ अभिहडे (अभिहृत)—सामा जाकर आहारादि देवे ते दोष । १२ उविभन्ने (उन्निन्न)—स्वैच्छादिक (छाया) ढोलकर देवे ते दोष । १३—मालोहडे (मालापहृत)—पीढो नीसरणी ल्या कर ऊंचे नीचे तीरच्छे से वस्तु नीकाल कर देवे ते दोष । १४ अचिरुज्जे (आच्छेद्य)—निरकाल सबल अवलस्तो विलयावे या खोस कर देवे ते दोष । १५ अणिसिद्धे (अनिस्तुष्ट)—दो के सीरकी वस्तु एक दूसरेको बिना माली देवे ते दोष । १६ अज्झोयरण् (अध्यव-पूरक)—भगाडी आधन माहि साधु नाया जाण अधिक ऊर देवे ते दोष । ॥ इति उद्गमका १६ दोष ॥

॥ अथ उत्पाद का १६ दोष—(जीभ्यारे लोलपीपणासे साधु लगावे) ॥

मूलगाथा-धई दूई निमित्त आजीववणीमगे तिगिच्छाय । कोहेमाणे मायालोभेय हवतिदस एए । ३

पुत्रि-पच्छा-सथत्र विज्जा मते य चरण जोगे य । उप्पायणाइ दोसा सोलसमे मलकम्मे य ॥४॥

१ धाई (धात्री)—घायरो काम करके आहारादि लेवे ते दोष । २ दुई (दुती)—दूतपना याने गृहस्त्रीका सन्देशा पहुँचा कर आहारादि लेवे ते दोष । ३ निमित्ते (निमित्त)—भूत भविष्य वर्त्तमान कालके लाभालाभ सुखदुःख जीवित मरणादि यतला कर आहारादि लेवे ते दोष । ४ आजीव (आजीविका)—अपना जाति कुल आदि प्रकाश कर आहारादि लेवे ते दोष । ५ वर्णीमगे (वर्णीपक)—राक भीखारी की तरह दीनपनासे मागकर आहारादि लेवे ते दोष । ६ तिगिच्छे (चिकित्सा)—दौघ की करके आहारादि लेवे ते दोष । ७ कोहे (क्रोध)—क्रोध करके आहारादि लेवे ते दोष । ८ माणे (मान)—अहंकार करके लेवे ते दोष । ९ माया (माया)—कपटार्थ करके लेवे ते दोष । १० लोभे (लोभ)—लोभ करके अधिक आहारादि लेवे, अथवा लोभ यतला कर लेवे ते दोष । ११ पुत्रिपचक्रासथव (पूर्व पश्चात् संस्तव)—पहले या पिछे दातार की प्रशंसा करके आहारादि लेवे ते दोष । १२ विजा (विद्या)—जिसकी अधिष्ठाता देवी हो अथवा जो साधनासे सिद्ध की गई हो उसको विद्या कहते हैं, ऐसी विद्या का प्रयोगसे आहारादि लेवे ते दोष । १३ मते (मंत्र)—जिसका अधिष्ठाता देव हो अथवा जिना साधनाके अक्षरविन्यास मात्र हो उसको मंत्र कहते हैं, ऐसा मंत्रका प्रयोगसे आहारादि लेवे ते दोष । १४ चुराण (चूर्ण)—एक वस्तुके साथ दूसरी वस्तु मिलानेसे अनेक तरहकी सिद्धि हो ऐसी अद्वय अंजनादिके प्रयोगसे आहारादि लेवे ते दोष । १५ जोगे (योग)—पाद (पग) लेपनादि सिद्धि यतला कर आहारादि लेवे ते दोष । १६ मूलकम्मे (मूलकर्म)—गर्भपातादि औषध यतला कर आहारादि लेवे ते दोष ॥ इति उत्पत्तरा १६ दोष ॥

॥ अथ एषणारा १० दोप—(गृहस्थी तथा साधु दोनो से लागे)

मूलगाथा—सकिय मखिय निमिखत्त पिहिय साहरिय दायगुम्मीसे ।

अपरिणाय लिच्छ कडिय एसणदोसा दस हवति ॥ ५ ॥

१ सकिय (शक्ति)—गृहस्थी को तथा साधु को गड्डा पड जाने बाद भाहारदि लेये ते दोप । २ मखिय (मखित)—मखित पाणो आदिसे हाथ की रखा या याठ मँजि हो उसके हाथसे भाहारदि लेये ते दोप । ३ निमिखत्त (निमिखत्त)—भस्मति यस्तु उपर सजति यस्तु पडी हो ते लेये ते दोप । ४ पिहिय (पिहित)—सजति यस्तु मखितसे टाकी हो ते लेये ते दोप । ५ साहरिय (सहित)—भस्मति यस्तु नित यासणमें पडी हो गड्ड यस्तु दूतर यासणमें याग्यर उसी यासणसे जो योग्य आहार देये ते लेये ते दोप । या अहा पथात् कर्म होनेकी समाधान हो ऐसे घरमें एक भानसे दूसरे भानमें आहारदि घाल कर दे उनमें पिछैसे मखित पाणीसे धानकी शका होने पर उम्मी भाजनसे भाहारदि लेये ते दोप । ६ दायग (दायक)—अथा दूला गड्डा आदि बन्धना करना गहराये उनसे लेये ते दोप । ७ उम्मीसे (उन्मिश्र)—मिश्र बीज लेये ते दोप । ८ अपरिणाय (अपरिणत)—शस्त्र पूरा परगम्या निना थोड़े समयरा लेये ते दोप । ९ लिच्छ (लिप्त) तुरतनी जगह गयी हुई हो उसके जह्म कर गहारदि लेये ते दोप । १० अडिय (अर्दित)—भस्मति छाटा पडता लेये ते दोप । ॥ इति एषणारा १० दोप ॥

॥ अथ ५ दोष आवश्यकरा ॥

१ उघाड किवाड उघाडणाए चू चू करतो कवाड ठेलीने उघाड कर तथा उघडाय कर आहारादि लेते दोष ।
 २ मडीपाहुडिआए—दोष निकाला हुआ लेवे ते दोष । ३ त्रलिपाहुडिआए—उच्छालनेके अर्थ किया हुआ चल पाहुला उछाल्या पहेला लेवे ते दोष । उच्छालने याद गृहस्थी भोगवे यह लेना न अटके । ४ अदिट्टपाहुडिआए—अणदिठे घासण का आहारादि लेवे ते दोष । ५ परिट्टावणिआए—नरस आहार को परठायने की इच्छा कर सरस आहारादि लेवे ते दोष ।

॥ अथ २ दोष उत्तराध्ययनरा ॥

१ सेणीषपिंड—अपने पूर्व सज्जनादि (नातिला गोतिला) से ही लाया हुआ आहार करे ते दोष । २ अकारण (मकारण)—किना कारण चीज माग कर लावे ते दोष ।

॥ अथ २३ दोष दशर्वकालिकरा ॥

१ दाण्डा—ग्रहगोचरादिके निमित्त डाकोत वीरहके वास्ते किया हुआ आहारादि यह जिम्या पहेला लेवे ते दोष, उसके जीमने याद यचा हुआ गृहस्थी जीमे तो यह लेने में अटके नहीं । २ पुराण्डा—पुन्य के अर्थ किया हुआ । जैसे—

दुकानमें धर्मोदा नीमाल हुआ धनका तथा मुबारे लारे पुन्यका किया हुआ आहारादि लेवे ते दोष । ३ समण्टुआ—बाबा सोगी सयासी के अर्थ किया हुआ आहारादि लेने ते दोष । उसको जीमने बाद गृहस्थी जीमे तो वह लेनाभटने नहीं । ४ यणी-मगगट्टा—राक भीखारी के चास्ते किया हुआ आहारादि लेवे ते दोष । उसको जीमने बाद गृहस्थी नामे तो वह लेना भटने नहीं । ५ निआगपिडु—नित्यप्रति एक ही घरका आहारादि लेवे ते दोष । ६ सजभायरपिडु—शल्यावर याने निमकी आशाने मकानमें उहग हो उसके घरका आहार लेवे ते दोष । ७ रायपिडु—गणपिडु चैने गाना रे गान रो, गनारे बीया हरो मदिरामिश्रित आहार लेने ते दोष । ८ किमिच्छिए—१ दानशाय का आहारादि लेवे ते दोष । २ कोई कोई रत्ना तरह भी कहते हैं कि बताय बताय नामसे माग माग लेवे ते दोष । ९ सघट्टिए—सचिचके सघट्टे रो आहारादि लेने ते दोष ।

१० बहुउम्माए—थोडा खानेमें आवे और उपादा नारनेमें आवे चैलो आहार लेने ते दोष । ११ पडिकुट कुलग—धोबी आदि निवेध कुलरो तथा चोर रे घरको आहारादि लेने ते दोष । १२ मम्मग—घर्या दुग घर रो आहारादि लेने ते दोष । जैसे—कोई कहे म्हारे घर मत आयनो उनको उस्या घर रहते हैं । १३ अनियत कुलग—गणिता भादि धर्मोन कारी कुलरो आहार लेने ते दोष । १४ पुव्वकम्ममे पच्छाकम्ममे—पहेग दोष रगारे तथा पिछे दोष गगारे जैसे—आहार धरेराया पहेग माधु भावा जानकर आथा पाछा कर दे, तथा उहेराया पिछे फिर बनाइ ले, या कचे पानी सु ठाम या हाथ पो लेवे ते दोष । १५ सुईगचे (सुरच) मदिरा आदि नरो रो आहारादि लेने ते दोष । १६ पल्लग—बफने घर

गायल बैठो होये ते उल्ल घ कर आहारादि लेवे ते दोष । १७ दारग—जिस द्वार पर लडका बा लडकी आडी बैठी हो उसको उल्ल घ कर आहारादि लेवे ते दोष । १८ साणग—जिस द्वार पर स्थान (कुत्ता) बैठा हो उसको उल्ल घ कर आहारादि लेवे ते दोष । १९ वच्छग—जिस द्वार पर गायको बाछडो बैठी हो उसको उल्ल घ कर आहारादि लेवे ते दोष । २० उल्ल घीअन-पवेसे—और भी ऐसा कोई घछडा बैठा हो उसको उल्ल घ कर आहारादि लेवे ते दोष । २० अगार्इता चलाईता—भागो पाछो कर जैसे—काचा पाणीको लोटो हाथमें है साधु साधवी आया देख जावतो पाछो फिर जाय, या कोई लचिल वस्तु हाथ में है साधु आया देख रख दे, तथा पहले घरमें जाकर घर्त्तन आगा पाछा करदे वह आहारादि लेवे ते दोष । २१ गोत्रणी काल मासणी—गर्भवती स्त्री सात मास पीछे उठ बैठ कर आहारादि दे वह लेवे ते दोष । २२ थाण पेजमाणी—बालक चूद्य रहा है उस वखत चूद्यते को छोडा कर आहार वहेराये घट लेने ते दोष । २३ नीय दवारतामसं—कोई मोथरी भणारी जो नीचो बारणो भीतर भ घेरो पडतो होय ऐसी जगहरो आहार लेवे ते दोष ।

॥ ६ दोष आचारांग सूत्र का ॥

१ निण पिडु—नित्य आहार बाटने साह त्याग करे, मापसे तोल्से बाटे वह आहार लेवे ते दोष । २ सखडिय (सख-डी)—न्यात जीमणवार शहर मारणी आदिक में आहारादि लेवे ते दोष । ३ वागारं—जाच करे अन्तराय देकर आहारादि लेवे ते दोष । ४ सधारवेणो—गमता कथा चार्त्ता से रिब्बाय कर आहारादि लेवे ते दोष । ५ फमेभवा (वीएजवा)—फूक

देकर पा प खी सु ठार कर आहार देवे वह लेवे ते दोष । ६ भुमालुहड -- नीचे भोंये से या नीची जगह से काढकर आधा

गदि देवे वह लेवे ते दोष ।

॥ अथ २ दोष ठाणागसूत्र तथा आचारागसूत्र का ॥

१ पावणीए पायणारे अये किया हुआ आहार पावणा जीम्या पहले लेवे ते दोष । २ मसारे--अमस्य मास आदि लेवे ते दोष ।

॥ अथ १२ दोष भगवती सूत्र का ॥

१ अङ्गारेअ --सर्गई राग सहित आहार करे ते दोष । उसका चाग्नित्र कोयले समान कहा । २ धूमे--सत्तक (माया) धूनी घूनी कुस्तराई दुस्तराई देय सहित आहारादि करे ते दोष । उसका चारित्र धूया समान कहा । ३ सजोअणा--म्याद नपजाने के लिये संयोग मिलाकर आहारादि लावे ते दोष । ४ खेताइकते--जो क्षेत्र में रहे वहा सूर्योदयसे पहले और सूर्योदय के पछि आहारादि लेय ते दोष । ५ कालाइकत--पहले पहोररो लायो आहारादि चोथे पहोरमें भोगवे ते दोष । ६ म-गाइकते--दो काश उपरान अमनादि लेजाकर भोगवे ते दोष । ७ पमणाइकते--प्रमाणसु अधिक आहार लेवे ते दोष । ८ आउए--गृहणी के आमत्रण से उसके घर जाकर आहारादि लेवे ते दोष । ९ कतारभत्त--अटवी (जंगल) में पो दातयाग योगह हो वहां आहारादि चंटनाहो वह लेवे ते दोष । १० दुबिमस्त्र भत्त --दुष्काल में वानशाला राक मीनगरीरे

जिन्हे गोत्री हों उसका आहारदि लेवे ते दोष । ११ चदलीया भत्त —परसाद आया कोई दातार भीवारी कोई जगह आहार घाटतो होय यह लेवे ते दोष । १२ गिलाण भत्त —रोगी ग्लानीके लिये किया हुआ आहारदि उसको जीम्या पहेंल लेवे ते दोष ।

॥ अथ ५ दोष प्रश्न व्याकरण सूत्र का ॥

१ रहग—चूरमारो त्याग है और लाडु वाघकर घेरारवे चट लेवे तो दोष । २ पजुजायं—बहिरा त्याग है और बहिरा रो राई तो घनाकर याने पर्याय बदला कर देवे यह लेवे ते दोष । ३ सहयागय—साधु आपरे हाथ सु औपघ गणनी अलावे आहारादि लेवे ते दोष । ४ अनुत्तरवाह समणट्टा (अन्तोवाहच्च)—भीतरसु तीन धारणा उपरात काढकर देवे यह लेवे ते दोष । ५ मोहिरच —चाल भाटरी तह विरदावली करके आहार लेवे ते दोष ।

॥ अथ निसीथ सूत्रमें आहार के ५ दोष ॥

१ उगासिय—शुद्ध से मनुष्यों में से पुकार करके कहे कि कोई यहा दातार है ” ऐसा कह कर आहारादि लेवे ते दोष । अडवी भत्त —अटवी में मजुरादिकरो भातेरो आहारादि मजुर जीम्या पहेंला लेवे ते दोष । ३ अन्नरथीया भत्त अन्य तीर्थी रोटी टुकड़ा माग कर लावे यह आहारादि लेवे ते दोष । ४ पासंठा भत्त (पासस्थिएण)—ढिलापा संत्या शीथला

चारों (निया खीत) का आहारदि लेवे ते दोष । ५ दुर्गच्छिय कुल—डूँढ, चुड़ो घमार आदि निंदनीक कुल, निम दुल में जाने से दुर्गछा करे उसका आहारदि लेवे ते दोष । सज्जाए निसोए सागरिय (निसीहीआए)—सज्जात ररे नेसरायसे तथा दलालोरो आहारदि लेवे ते दोष ।

॥ अथ दशा श्रुतस्कथमें आहार के २ दोष ॥
१ बालट्टा—बालकरे कथें किया हुआ आहार यालक जीम्या पहिले लेवे ते दोष । २ गम्भणी अट्टा—गर्भिणी स्त्रीके भरणें किया आहारदि गर्भवती स्त्री जिम्बा पहिले आहारदि लेवे ते दोष ।

॥ दृढकल्पमें आहारके १ दोष ॥
१ प्रासिया—कालप्रमाण उपरको तथा वासी राखने पावे ते दोष ।

॥ इति आहार के १०६ दोष समाप्त ॥
ओछो अधिको आगो पाछो सूत्र विपरित लीखा गयो होय तो सुब करे और सज्जन हमको उणाव दे ।

संवत् १९७६ वर्षे फाल्गुन मासे कृष्ण पक्षे सप्तमी बुधवासर ॥ शुभं भवतु ॥
भूल बूक तत्स मिछाति दुःख ॥

श्री जगत्पन्थ भैरवदान सेठिया नैन प्रत्यालय । वीकानेर (राजपूताना)



ग्यारह द्वार सात समकित को थोकडो ।

पो

२

१ नाम द्वार	२ क्षायिक समकित	३ उपशम समकित	४ क्षायिकरी वेदक सम कित	५ सासादन समकित	६ मिश्र समकित	७ मिथ्यात्व
२ लक्षण द्वार	७ प्रवृत्ति लप्यावे	७ प्रवृत्ति क्षयो-पशमावे	१ वेदे ६ खपावे	उपशम से पडे तो अन-न्तानु यधीरे उदय	मिश्र मोह-नीरे उदय	मिथ्यात्व मोहनीरे उदय
३ स्पीति द्वार	आदि अनत	अतर्महुत्स	जयन्य अतर्महुत्स, उत्कृष्ट ६६ सागर, भाजेरी	जयन्य एक समय उत्कृ-ष्ट का	अतर्महुत्स	३ भागा-१ अथादि अन त अभवि २ अथादि सात अवि ३ सावि सागर पडवे समवृष्टि सीने भागेरो स्पी-ति जयन्य अन्तमुहुत्स उ रष्टदेय उणी अर्द्ध पुत्रल ॥॥ वस म
४ अतर द्वार	आतरो नवी	जयन्य, अत-र्महुत्स उत्कृष्ट अतर पडे तो देश उणी अर्द्ध पुत्रल परागर्जन काल	आतरो रही वेदक आया पीछे क्षायक निश्चय आचे	उपशम माफिक	उपशम माफिक	वदिते हुने भागेरा आतरो नवी, सीने भागे सादि सां तरो आतर पड तो जयन्य अतर्महुत्स उत्कृष्ट ६६ सा-गर भागेरो

श्री अग्रचन्द्र भैरोदान सेठिया जैन ग्रन्थालय बीकानेर ।

५ आकरस	क्षायक मय	अधम्य एकमय	क्षयोपशम मय	एक मय में	उपशम माफिक	क्षयापशम माफिक	क्षयोपशम माफिक
आर	मे एकवार	मे एकवार उत्कृष्ट	मयमें अधम्य एक	एकवार			
	मोडे, माया	दो बार घणा मय	वार, उत्कृष्ट म	एकवार			
	पीछे जावे	आसरे अधम्य दो	घणों मयमें अब	आवे शाम			
	नहीं	वार, उत्कृष्ट पाक	न्य दो बार, उत्कृ	करे प्राप्ति			
१ जीररा	७	वार	ए मयलयाती बार	करे			
मेद				१		१	१५
३ गुणठा	११	८		४	दुजो	मीजो	पहेलो
णा द्वार							
८ योग	१७	१३	१५	६	१३	१०	१३
द्वार							
६ उपयोग	६	७	७	७	५	५	६
द्वार							
१० लेख्या	६		६	३	५	५	५
द्वार							
११ अल्प	६ क्षायकरा	नीजे उपशमरा	पाचमे क्षय उप	पहला क्षाय	दुजा मास्या	चाथे मिथरा	सातमें मिथ्यात्व
बहुत्व द्वार	अनंत गुणा	सक्यात गुणा	शमरा सक्यात	करीवेकरा	दुनरा स	अमक्यात	रा अनंत गुणा
			गुणा	सकसे गोढा	क्यात गुणा	गुणा	

अ. प्रो.

(■)

२२ तीजा देवलोकना देवता अस ख्यात गुणा	२	४	११	६	१
२३ चौथी नरकना नेरिया अस ख्यात गुणा	२	४	११	६	१
२४ छमुर्च्छिम मनुष्य अस ख्यात गुणा	१	१	३	४	३
२५ बीजा देवलोकना देवता अस ख्यात गुणा	२	४	११	६	१
२६ बीजा देवलोकनी देवी स ख्यात गुणा	२	४	११	६	१
२७ पहिला देवलोकना देवता स ख्यात गुणा	२	४	१	६	१
२८ पहिला देवलोकना देवी स ख्यात गुणी	२	४	११	६	१
२९ भुवनपति देवता अस ख्यात गुणा	३	४	११	६	४
३० भुवनपति देवी स ख्यात गुणा	२	४	११		४
३१ पहिलो नरकना नेरिया अस ख्यात गुणा	३	४	११	६	१
३२ जेचर, तिथिच पुरुष अस ख्यात गुणा	२	५	१३	६	६

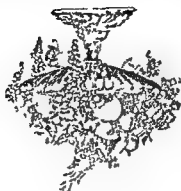
जेचर पुरुषा अस योनिया

३३ जेचरनी स्त्री स ख्यात गुणी	२	५	१३	६	६
३४ धलचर पुरुष स ख्यात गुणा	२	५	१३	६	६
३५ धलचरनी स्त्री स ख्यात गुणा	२	५	१३	६	६
३६ जलचर पुरुष स ख्यात गुणा	२	५	१३	६	६
३७ जलचरनी स्त्री स ख्यात गुणी	२	५	१३	६	६
८ व्यतर देवता स ख्यात गुणा	३	४	११	६	४
३९ व्यतर देवी स ख्यात गुणा	२	४	११	६	४
४० ज्योतिपी देवता स ख्यात गुणा	२	४	११	६	१
४१ ज्योतिपीनी देवी स ख्यात गुणा	२	४	११	६	१
४२ जेचर नपुसक स ख्यात गुणा	२५४	५	१३	६	६
४३ धलचर नपुसक स ख्यात गुणा	२५४	५	१३	६	६
४४ जलचर नपुसक स ख्यात गुणा	२५४	५	१३	६	६
४५ चौरिद्रिय पर्याप्ता स ख्यात गुणा	१	१	२	४	३
४६ पंचेन्द्रिय पर्याप्ता विशेषाहिया	२	१२	१४	१०	१
४७ वेदन्द्रिय पर्याप्ता विशेषाहिया	१	१	२	२	३

(घ)

७३ सूक्ष्म निगाद्य पयाप्ता स क्ख्यात गुणा	१	१	१	३	३
७४ अभवी अनत गुणा	१४	१	१३	१	
७५ पदधाइ समदृष्टि अनतगुणा	१४	१४	१	१८	१
७६ सिद्ध भगवत जी अनतगुणा	०		०	१	०
७७ वादर घनस्पति पयाप्ता अनतगुणा	१	१	१	३	३
७८ वादर पयाप्ता विशेषाहिया	६	१४	१५	१८	१
७९ वादर घनस्पति अपयाप्ता अस क्ख्यातगु०	१	१	३	३	३
८० वादर अपयाप्ता विशेषाहिया	६	३	१	८५६	-
८१ समुच्चय वादर विशेषाहिया	१८	१४	१९	१८	६
८२ सूक्ष्म घनस्पति अपयाप्ता अस क्ख्यातगु०	१	१	३	३	३
८३ सूक्ष्म अपयाप्ता विशेषाहिया	१	१	३	३	३
८४ सूक्ष्म घनस्पति पयाप्ता स क्ख्यात गुण	१	१	१	३	३
८५ सूक्ष्म पयाप्ता विशेषाहिया	१	१	१	३	३
८६ समुच्चय सूक्ष्म विशेषाहिया	८	१	३	३	३
८७ भव सिद्धिया विशेषाहिया	१४	१४	१५	१८	१
८८ निगादिया जात्र विशेषाहिया	४	८	३	३	३
८९ घनस्पति जीव विशेषाहिया	४	१	३	३	४
९० परुन्द्रिय जीव विशेषाहिया	४	१	१	३	४
९१ तिर्यञ्च जीव विशेषाहिया	१४		१३	६	३
९२ मिथ्या दृष्टि जीव विशेषाहिया	१४	१	१३	६	६
९३ भ्रष्टी जात्र विशे वाहिया	१४	४	१३	६	६
९४ सन्ध्यायी जात्र विशेषाहिया	१४	१०	१	१०	६
९५ उद्गमन्ध जात्र विशेषाहिया	१४	१८	१	१०	६
९६ सयागी जीत्र विशेषाहिया	१४	१३	१	१२	१
९७ संसारी जीत्र विशेषाहिया	१४	१४	१५	१२	६
९८ समुच्चय जात्र विशेषाहिया	१४	१४	१५	१२	६

२४ गाल उमूर्तिम मनुष्यक वृद्ध २४ मुहूर्त ना विरह तं मणी ता



॥ अथ मन्त्र ॥

(श्रीगणेशाय नमः)

अथ मन्त्रः श्रीगणेशाय नमः

॥ इति श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ मन्त्रः ॥ १३ = १३ + १३

अथ मन्त्रः ॥ १३ = १३ + १३

अथ मन्त्रः ॥ १३ = १३ + १३

अथ मन्त्रः ॥ १३ = १३ + १३

अथ मन्त्रः ॥ १३ = १३ + १३

अथ मन्त्रः ॥ १३ = १३ + १३

अथ मन्त्रः ॥ १३ = १३ + १३

अथ मन्त्रः ॥ १३ = १३ + १३

अथ मन्त्रः ॥ १३ = १३ + १३

अथ मन्त्रः ॥ १३ = १३ + १३

अथ मन्त्रः ॥ १३ = १३ + १३

अथ मन्त्रः ॥ १३ = १३ + १३

अथ मन्त्रः ॥ १३ = १३ + १३

अथ मन्त्रः ॥ १३ = १३ + १३

(५)

पुस्तक मिलनेका पता—
अग्ररचन्दजी भैरवदानजी सठिया

का

जैनग्रन्थालय जैन विद्यालय तथा कन्या पाठशाला ।

मादवा मण्डियाण

बीकानेर—राजपूताना

Jain Jnyan Thokara Sangrah

To be had at

- (1) The Jain Library,
(2) The Jain National Seminary, **SIKANER, (Rajputana)**
(3) The Jain National Girls Institute,
Moholla Moreban

श्री तिरापथ विश्वार मठ
की कानून

जेन दर्शन में
तत्त्व-मीमांसा

—मुनि नथमल